मेरा राजस्थान

वर्ष-२०, अंक- १०, मुम्बई, दिसंबर २०२५ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४० मूल्य -१००.०० रूपए प्रति

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

भारत का एक राज्य राजस्थान के 'चूरू' निवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

गौमाता को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान मिले, 'भारत को केवल 'भारत' ही संवैधानिक रूप से बोला जाए

GREENTECH PACKAGING

निवेदक: पार्थ-अशोक-ओंकार चौधरी

A.204 Ivy Tower Vasant Valley, Dindoshi,
Malad East, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400097

Remove India Name From the Constitution India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

http:// www.merarajasthan.co.in

भारत को 'भारत' ही बोला जाए अभियान

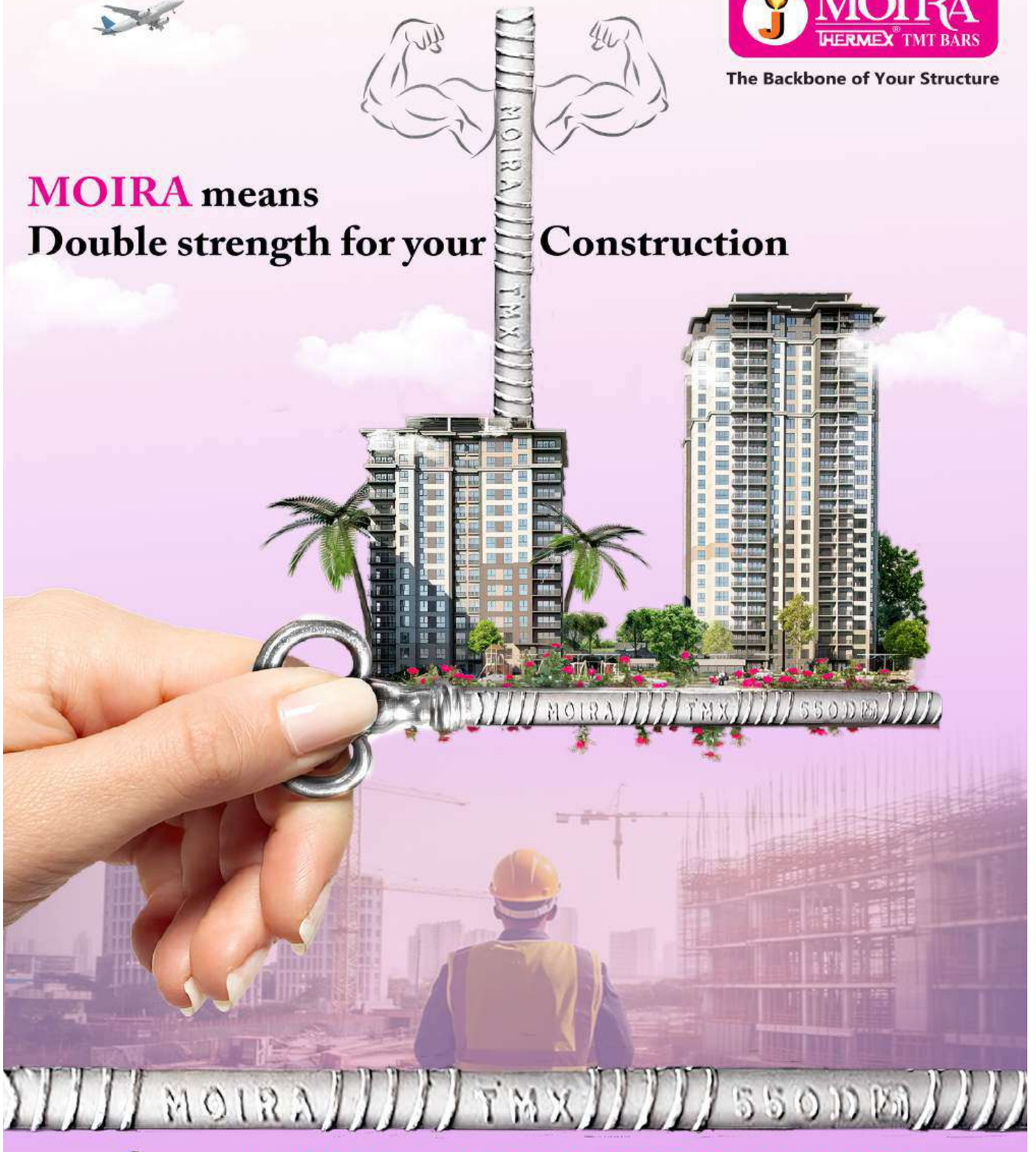

MOIRA
THERMEX TMT BARS
The Backbone of Your Structure
MOIRA means
Double strength for your Construction
Available In : Fe 550, Fe 550D, Fe 600 & CRS
JAIDEEP METALLICS
& Alloys Pvt. Ltd.
106 / 107 / 108, 1st Floor, Neha Ind. Estate, Behind CCI Ltd., Off Dattapada Road, Borivali (E),
Mumbai - 400 066. Phone : +91 2242032000 Fax : +91 22 42032020
Email : ajay@moiratmt.com | marketing@moirantmt.com

With Best Compliments:

'राजस्थान श्री' गौरी शंकर राठी

अध्यक्ष

श्री माहेश्वरी सभा चेन्नई

Gouri Shankar - Saroj - Amit Kumar Rathi

Brindavan, 3/285, V. V. Subramaniam Salai Nainarkuppam,
Uthandi, Chennai - 600119 (Tamilnadu)
Ph: 044-24530755 | Cell: 9840009451
Email: gourishankarrathi@gmail.com

Amit Trexim Private Limited

2A, Suvarnalok, 34 Malony Road, T. Nagar,
Chennai - 600 017. (Tamilnadu)
Ph: 044-24337156 | Cell: +91 96202 32579
Email: amitkumarr@gmail.com | Cell-9840009451

७ चूरू का नया इतिहास लिखेंगें...

८ रेगिस्तान की रेत में लिखा...

१३ जैसलमेर में पर्यटन स्थल

१९ जैसलमेर के धार्मिक स्थल

३० श्री लोद्रवापुर जैन तीर्थ

दिसंबर २०२५ के अंक की झलकियाँ

और भी बहुत कुछ....

'मेरा राजस्थान' जनवरी २०२६ री विशेषतावां

अ ग ला अं क

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें
Remove INDIA Name From The Constitution
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

गायों की सेवा करो, और बचाओ जान ।

सदियों का इतिहास हमारा,गौ-संवर्धन अपनाना है

NAR INDIA

A51800010359

Dream Dwellers™

Where Dreams Become Realty

TRUSTED

REAL ESTATE CONSULTANTS

SINCE 1994

FOR-BUY*SELL*RENT OF

RESIDENTIAL & COMMERCIAL PROPERTIES

DEEPAK JAIN
9820163133
9920619990

AKSHAT JAIN
9920466456
9920466446

410 D, 4th Floor, Vora Hive 67, Near Raghuleela Mall, Above Pantaloons,
Kandivali West, Mumbai, Maharshtra, Bharat - 400067
Mob: 9331888111, 9331888222
dreamdwellers2209@gmail.com

मेरा राजस्थान
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष-२०, अंक १०, दिसंबर २०२५

१२ अंक वार्षिक १२००/-

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ का लाडला

उपसम्पादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मो. 9702205252

'मेरा राजस्थान' के संरक्षक
स्व. रामनारायण घ. सराफ, मुम्बई

सम्पर्क करें...
सम्पादकीय कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राईवेट लिमिटेड
की शानदार प्रस्तुति

मेरा राजस्थान
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

बी- २१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व,
मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059. दूरध्वनि - 022- 4015 8094

भ्रमणध्वनिः 9322307908

अणुडाकः mailgaylordgroup@gmail.com
mainbharathunfoundation@gmail.com
अन्तरताना : http//: www.merarajasthan.co.in
http//:www.bijayjain.com

संपादकीय ....

हम भारतीय राजस्थानियों की एक और इच्छा
गौ माता को राष्ट्रमाता का सम्मान मिले

कहते हैं 'गौमाता' में कोटिश: देवताओं के निवास होते हैं इसलिए हम सभी 'पहली रोटी गाय के नाम' कह कर पूजा भी करते हैं, ऐसी भारतीय पवित्र आत्मा 'गौमाता' को हम 'राष्ट्रमाता' का सम्मान न दिला पाएं तो हमारा जीवन निरर्थक कहा जा सकता है, हम सभी भारतीय राजस्थानी चाहते हैं कि 'गौमाता' को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान भारतीय गणराज्य में प्राप्त हो, इसके लिए प्रयास भी जारी है, बस आप सभी का सहयोग व मार्गदर्शन मिलता रहे, ऐसी प्रार्थना मैं तहेदिल से करता हूं।

राजस्थान का एक शहर सुनहरे रेत से सजा 'जैसलमेर' का संक्षिप्त इतिहास, आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है, इसके साथ जैन समाज का ऐतिहासिक तीर्थ 'लौद्रव' के बारे में लिखते हुए धार्मिक प्रसन्नता भी हो रही है, आप कहेंगे धार्मिक प्रसन्नता भी होती है क्या? तो मैं कह सकता हूं कि जरूर होती है, जब हम दिल से धर्मस्थल का उल्लेख करते हैं और हमारी लेखनी से वे शब्द अपने आप उकेर दिए जाते हैं, तो ऐसा लगता है कि धार्मिक जीवन सफल हो रहा है। मैं तो इतना ही कहूंगा ६ से ८ मार्च २०२६ को होने वाले 'चादर महोत्सव' में देश-दुनिया से लोग पहुंचे और सामाजिक-सांस्कृतिक-धार्मिक उत्सव में अपनी उपस्थिति दिखाते हुए ऐसे अनमोल उत्सव को 'राष्ट्रीय उत्सव' बना दें। जय-जय राजस्थान!

SBI BANK
for payment

HDFC BANK
for payment

आपका अपना
– बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए का आव्हान
करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

भारत को भारत ही बोलें INDIA नहीं, जय भारत!

गो पालीं तब ही बने, कान्हा जी गोपाल ।
दूध-दही से वे करें, सब को मालामाल ।।

गायों की सेवा करो, और बचाओ जान ।
कान्हा आगे आयेंगे,सुख की छतरी तान ।।

पहली रोटी गाय के नाम

चुड़ीवाला परिवार

vinar integration ltd.

201-203, Morya Estate, Andheri Link Road, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400053
दूरध्वनि:+ 91 22 66923100, 66923200, अणुडाक: vinar@vinarweb.com

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम

Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतवर्ष' लिखवायें

चूरू का नया इतिहास लिखेगें -ओंकार चौधरी, संरक्षक चूरू नागरिक संघ

मुंबई: 'चूरू नागरिक संघ' मुंबई द्वारा दीपावली स्नेह सम्मेलन कार्यक्रम का आयोजन सीवर गार्डन, मीरा भयंदर रोड में आयोजित किया गया भारी बरसात होने के बावजूद भी कार्यक्रम में चूरू नागरिक प्रवासी संघ के परिवार भारी संख्या में उपस्थित हुए।

कार्यक्रम की शुरुआत गणेश वंदना के साथ मारवाड़ी गीत बच्चों द्वारा नृत्य, संगीत, मिमिक्री के साथ मनमोहन कृष्ण राधा नृत्य ने दर्शकों का मन मोह लिया। बच्चों के लिए जादू का कमाल सरप्राइज गिफ्ट रखे गए इसके अलावा मेरिट में आए विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि चूरू से डॉक्टर एवं प्रोफेसर श्री एल. एन. आर्य व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज आर्य विशेष रूप से उपस्थित थे।

सर्व श्री राकेश सिरसेवाला सीए, हर्ष बजाज सीए एवं डॉक्टर गोविंद झिरमिरिया की विशेष उपस्थिति रही। मीरा-भायंदर के विधायक नरेंद्र मेहता, भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष दिलीप जैन, एडवोकेट रवि व्यास, 'मेरा राजस्थान' पत्रिका की कार्यकारी संपादक अनुपमा शर्मा (दाधीच) ने कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति देकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

'चूरू नागरिक' संघ के सभी पदाधिकारी सुभाष चंद्र चौधरी अध्यक्ष, रवि प्रकाश बगड़िया सचिव, शिवकुमार भाऊवाला कोषाध्यक्ष, विश्वनाथ बगड़िया संरक्षक, मुरली मनोहर बालन मुख्य सलाहकार, सुशील कुमार कंदोई, संजय सरावगी, राजीव कोठारी, लक्ष्मीकांत गुप्ता, श्रवण सराफ, सुशील सराफ, उमाशंकर ढंढारिया, सुशील पोद्दार, पन्नालाल जांगिड़, कमल पोद्दार के साथ कृष्ण लाल मोर वरिष्ठ उपाध्यक्ष ने कार्यक्रम का सुंदर संचालन कर कार्यक्रम को गरिमामयी बना दिया।

चूरू नागरिक संघ के मनोनीत ट्रस्टी ओंकारमल चौधरी ने कहा कि 'चूरू' के विकास की बात:

भुजाओं पर जब हमें विश्वास होगा।
तब चूरू का एक नया इतिहास होगा।
एक दिन निश्चित चूरू में उल्लास होगा।
आस्था की नाव को जब मिलेगी मंजिल,
तब हौसला चूरू नाविकों के पास होगा।
जय जय राजस्थान एवं आपणों चुरु।

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Follow for more updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

रेगिस्तान की रेत में लिखा
सुनहरे जैसलमेर का इतिहास

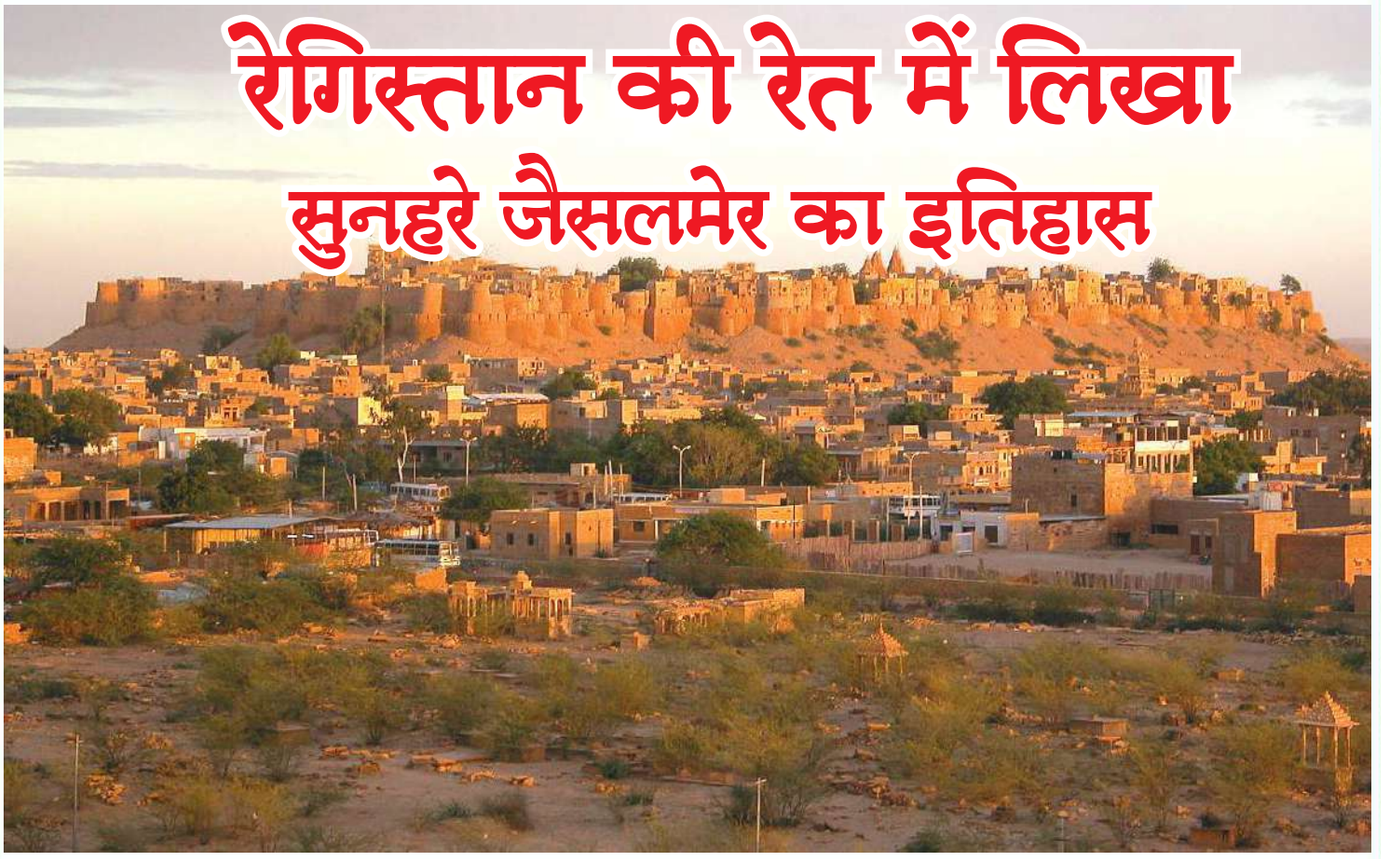

जैसलमेर: शहर, पश्चिमी राजस्थान राज्य, पश्चिमोत्तर भारत में स्थित है। अनुपम वस्तुशिल्प, मधुर लोक संगीत, विपुल सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत को अपने में संजोये हुए 'जैसलमेर' स्वर्ण नगरी के रूप में विख्यात है। पीले भूरे पत्थरों से निर्मित भवनों के लिए विख्यात जैसलमेर की स्थापना ११५६ ई. में राजपूतों (राजपूताना ऐतिहासिक क्षेत्र के योद्धा शासक) के सरदार रावल जैसल ने की थी। रावल जैसल के वंशजों ने यहाँ भारत के गणतंत्र में परिवर्तन होने तक बिना वंश क्रम को भंग किए हुए ७७० वर्ष सतत शासन किया, जो अपने आपमें एक महत्त्वपूर्ण घटना है। सल्तनत काल के लगभग ३०० वर्ष के इतिहास में गुजरता हुआ यह राज्य मुग़ल साम्राज्य में भी लगभग ३०० वर्षों तक अपने अस्तित्व को बनाए रखने में सक्षम रहा। भारत में अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना से लेकर समाप्ति तक भी इस राज्य ने अपने वंश गौरव एवं महत्त्व को यथावत रखा। 'भारत' की स्वतंत्रता के पश्चात् यह भारतीय गणतंत्र में विलीन हो गया।

विशेषता तथा महत्त्व

जैसलमेर पीले सुन्दर पत्थर का बना हुआ है जो नगर की विशेषता है, यहाँ के मंदिर व प्राचीन भवन और प्रासाद भी इसी पीले पत्थर के बने हुए हैं और उन पर जाली का बारीक काम किया हुआ है। भारत में 'जैसलमेर' पर्यटन का सबसे आकर्षक स्थल माना जाता है।

भारत के मानचित्र में 'जैसलमेर' ऐसे स्थल पर स्थित है, जहाँ इतिहास में इसका विशिष्ट महत्त्व है, इस राज्य का भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमा पर विस्तृत क्षेत्रफल होने के कारण यहाँ के शासकों ने अरबों तथा तुर्की के प्रारंभिक हमलों को न केवल सहन किया वरन् दृढ़ता के साथ इन बाहरी आक्रमणों से उन्हें पीछे धकेलकर राजस्थान, गुजरात तथा मध्य भारत को सदियों तक सुरक्षित रखा।

मेवाड़ और जैसलमेर राजस्थान के दो राजपूत राज्य हैं, जो अन्य राज्यों से प्राचीन माने जाते हैं, जहाँ एक ही वंश का लम्बे समय तक शासन रहा है, हालाँकि जैसलमेर राज्य की ख्याति मेवाड़ के इतिहास की तुलना में बहुत कम हुई है, इसका मुख्य कारण यह है कि मुग़ल काल में जहाँ मेवाड़ के महाराणाओं की स्वाधीनता बनी रही वहीं अन्य शासक की भाँति 'जैसलमेर' के महारावलों द्वारा मुग़लों से मेलजोल कर लिया, जो अंत तक चलता रहा।

'जैसलमेर' आर्थिक क्षेत्र में भी यह राज्य एक साधारण आय वाला पिछड़ा क्षेत्र रहा है, जिसके कारण यहाँ के शासक कभी शक्तिशाली सैन्य बल संगठित नहीं कर सके, इसके विस्तृत भू-भाग को दबा कर इसके पड़ोसी राज्यों ने नए राज्यों का संगठन कर लिया, जिनमें बीकानेर, खैरपुर, मीरपुर, बहावलपुर एवं शिकारपुर आदि राज्य हैं। जैसलमेर के इतिहास के साथ प्राचीन यदुवंश तथा मथुरा के राजा यदु वंश के वंशजों का सिंध, पंजाब, राजस्थान के भू-भाग में पलायन और कई राज्यों की स्थापना आदि के अनेकानेक ऐतिहासिक व सांस्कृतिक प्रसंग जुड़े हुए हैं, सामान्यत: लोगों की कल्पना में यह स्थान धूल व आँधियों से घिरा रेगिस्तान मात्र है, परंतु इतिहास एवं काल के थपेड़े खाते हुए भी यहाँ प्राचीन संस्कृति, कला, परंपरा व इतिहास अपने मूल **शेष पृष्ठ ९ पर...**

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

पृष्ठ ८ से... रूप में विद्यमान रहा तथा यहाँ के रेत के कण-कण में पिछले आठ सौ वर्षों के इतिहास की गाथाएँ भरी हुई हैं।

'जैसलमेर' राज्य ने मूल भारतीय संस्कृति, लोक शैली, सामाजिक मान्यताएँ, निर्माणकला, संगीतकला, साहित्य, स्थापत्य आदि के मूलरूपांतरण को बनाए रखा है।

भौगोलिक संरचना

यह विशाल 'थार' मरुस्थल का एक बड़ा भाग है। भारतीय गणतंत्र के विलीनीकरण के समय इसका भौगोलिक क्षेत्रफल १६,०६२ वर्ग मील के विस्तृत भू-भाग पर फैला हुआ था। रेगिस्तान की विषम परिस्थितियों में स्थित होने के कारण यहाँ की जनसंख्या बीसवीं सदी के प्रारंभ में मात्र ७६,२५५ थी। 'जैसलमेर' भारत के पश्चिम भाग में स्थित थार के रेगिस्तान के दक्षिण पश्चिमी क्षेत्र में फैला हुआ था। मानचित्र में 'जैसलमेर' राज्य की स्थिति उत्तर पूर्व देशांतर है, परंतु इतिहास के घटनाक्रम के अनुसार उसकी सीमाएँ सदैव घटती बढ़ती रहती थी, जिसके अनुसार राज्य का क्षेत्रफल भी कभी कम या ज्यादा होता रहता था।

भू-आकृति: इसकी पश्चिम-उत्तरी और उत्तरी-पश्चिम सीमा पाकिस्तान के साथ लगती है तथा उत्तर-पूर्व में बीकानेर, दक्षिण में बाड़मेर तथा पूर्व में इसकी सीमा जोधपुर से मिलती है, विशाल 'थार' मरुस्थल का भाग होने के कारण यह क्षेत्र रेतीला, सूखा तथा पानी की कमी वाला है, पूरे ज़िले में विभिन्न आकार-प्रकार के बालू के ऊँचे-ऊँचे टिब्बों का विशाल सागर सा दिखाई देता है, यहाँ दूर-दूर तक स्थाई व अस्थाई रेत के ऊँचे-ऊँचे टीले हैं, जो कि हवा, आंधियों के साथ-साथ अपना स्थान भी बदलते रहते हैं, इन्हीं रेतीले टीलों के मध्य कहीं-कहीं पर पथरीले पठार व पहाड़ियाँ भी स्थित हैं, अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण जैसलमेर 'मरुस्थल की राजधानी' कहलाता है, इस संपूर्ण इलाक़े का ढाल सिंध नदी व कच्छ के रण अर्थात् पश्चिम-दक्षिण की ओर है, इसके आसपास का क्षेत्र, जो पहले एक रियासत था, लगभग पूरी तरह रेतीला बंजर इलाक़ा है और थार रेगिस्तान का एक हिस्सा है, यहाँ की एकमात्र नदी 'काकनी' काफ़ी बड़े इलाक़े में फैल कर 'भिज' झील का निर्माण करती है, ज्वार और बाजरा यहाँ की मुख्य फ़सलें हैं। बकरी, ऊँट, भेड़ और गायों का प्रजनन बड़े पैमाने पर किया जाता है। चूना - पत्थर, मुलतानी मिट्टी और जिप्सम का खनन होता है।

जलवायु: जैसलमेर राज्य का संपूर्ण भाग रेतीला व पथरीला होने के कारण यहाँ का तापमान मई-जून में अधिकतम ४ प्रतिशत सेंटीग्रेड तथा दिसम्बर-जनवरी में न्यूनतम ४ प्रतिशत सेंटीग्रेड रहता है, यहाँ संपूर्ण प्रदेश में जल का कोई स्थाई स्रोत नहीं है। वर्षा होने पर कई स्थानों पर वर्षा का मीठा जल एकत्र हो जाता है, यहाँ अधिकांश कुओं का जल खारा है तथा वर्षा का एकत्र किया हुआ जल ही एकमात्र पीने के पानी का साधन है।

इतिहास: १२वीं शताब्दी में जैसलमेर अपनी चरम सीमा पर था। आरंभिक १४वीं शताब्दी में दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खीलजी द्वारा राजधानी को नेस्तनाबूद किए जाने के बाद इसका पतन हो गया, बाद में यह मुग़ल सत्ता के अधीन हो गया और १८१८ में इसने अंग्रेज़ों के साथ राजनीतिक संबंध क़ायम किए। १९४९ में यह राजस्थान राज्य में शामिल हो गया। जैसलमेर राजपूताने की प्राचीन रियासत तथा उसका मुख्य नगर है। किंवदंती के अनुसार जैसलराव ने जैसलमेर की नींव ११५५ ई. (विक्रम संवत) में डाली थी, कहा जाता है कि जैसलराव के पूर्व पुरुषों ने ही ग़ज़नी बसाई थी और उन्होंने ही राजा शालिवाहन के समय में स्यालकोट बसाया था, किसी समय 'जैसलमेर' बड़ा नगर था जो अब इसके अनेक रिक्त भवनों को देखने से मालुम होता है। प्राचीन काल में यहाँ पीला संगमरमर तथा अन्य कई प्रकार के पत्थर तथा मिट्टियाँ पाई जाती थीं जिनका अच्छा व्यापार था। 'जैसलमेर' का इतिहास अत्यंत प्राचीन रहा है, यह शहर प्राचीन सिन्धु घाटी सभ्यता का क्षेत्र रहा है। वर्तमान जैसलमेर ज़िले का भू-भाग प्राचीन काल में 'माडधरा' अथवा 'वल्लभमण्डल' के नाम से प्रसिद्ध था। माना जाता है कि महाभारत युद्ध के पश्चात् कालान्तर में यादवों का मथुरा से काफ़ी संख्या में बहिर्गमन हुआ। जैसलमेर के भूतपूर्व शासकों के पूर्वज, जो अपने को भगवान कृष्ण के वंशज मानते हैं, संभवत: छठी शताब्दी में 'जैसलमेर' के भूभाग पर आ बसे थे, ज़िले में यादवों के वंशज भाटी राजपूतों की प्रथम राजधानी तनोट, दूसरी लौद्रवा तथा तीसरी जैसलमेर में रही।

पौराणिक इतिहास: वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण के किष्किन्धा कांड में पश्चिम दिशा के जनपदों के वर्णन में मरुस्थली नामक जनपद की चर्चा की गई है। डॉ. ए. बी. लाल के अनुसार यह वही मरु भूमि है, महाभारत के अश्वमेघिक पर्व में वर्णन है कि हस्तिनापुर से जब भगवान श्रीकृष्ण द्वारका जा रहे थे तो उन्हें रास्ते में बालू, धूल व काँटों वाला मरुस्थल (मरुभूमि) का रेगिस्तान पड़ा था, **शेष पृष्ठ १० पर...**

मैं भारत हूँ फाउंडेशन द्वारा
भारत के इतिहास में पहली बार 22 भारतीय भाषाओं में
'भारत नाम सम्मान' गीत निर्माण पर अति शुभकामनाएं!
।। श्रीमते रामानुजाय नमः !!

श्री महालक्ष्मी अष्टोत्तरशत नामावलि

१. ॐ प्रकृत्यै नमः	२८. ॐ कामाक्ष्यै नमः	५५. ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः	८२. ॐ उदारांगायै नमः
२. ॐ विकृत्यै नमः	२९. ॐ क्रोधसंभवायै नमः	५६. ॐ प्रभायै नमः	८३. ॐ हरिण्यै नमः
३. ॐ विद्यायै नमः	३०. ॐ अनुग्रहपरायै नमः	५७. ॐ चंद्रवदनायै नमः	८४. ॐ हेममालिन्यै नमः
४. ॐ सर्वभूतहितप्रदायै नमः	३१. ॐ ऋद्धये नमः	५८. ॐ चंद्रायै नमः	८५. ॐ धनधान्य कर्यै नमः
५. ॐ श्रद्धायै नमः	३२. ॐ अनघायै नमः	५९. ॐ चंद्रसहोदर्यै नमः	८६. ॐ सिद्धये नमः
६. ॐ विभूत्यै नमः	३३. ॐ हरिवल्लभायै नमः	६०. ॐ चतुर्भुजायै नमः	८७. ॐ स्त्रैण सौम्यायै नमः
७. ॐ सुरभ्यै नमः	३४. ॐ अशोकायै नमः	६१. ॐ चंद्ररूपायै नमः	८८. ॐ शुभप्रदायै नमः
८. ॐ परमात्मिकायै नमः	३५. ॐ अमृतायै नमः	६२. ॐ इन्दिरायै नमः	८९. ॐ नृपवेश्म गतानंदायै नमः
९. ॐ वाचे नमः	३६. ॐ दीप्तायै नमः	६३. ॐ इन्दुशीतलायै नमः	९०. ॐ वरलक्ष्म्यै नमः
१०. ॐ पद्मालयायै नमः	३७. ॐ लोकशोक विनाशिन्यै नमः	६४. ॐ आह्लादजनन्यै नमः	९१. ॐ वसुप्रदायै नमः
११. ॐ पद्मायै नमः	३८. ॐ धर्मनिलयायै नमः	६५. ॐ पुष्ट्यै नमः	९२. ॐ शुभायै नमः
१२. ॐ शुच्यै नमः	३९. ॐ करुणायै नमः	६६. ॐ शिवायै नमः	९३. ॐ हिरण्यप्राकारायै नमः
१३. ॐ स्वाहायै नमः	४०. ॐ लोकमात्रे नमः	६७. ॐ शिवकर्यै नमः	९४. ॐ समुद्र तनयायै नमः
१४. ॐ स्वधायै नमः	४१. ॐ पद्मप्रियायै नमः	६८. ॐ सत्यै नमः	९५. ॐ जयायै नमः
१५. ॐ सुधायै नमः	४२. ॐ पद्महस्तायै नमः	६९. ॐ विमलायै नमः	९६. ॐ मंगलायै नमः
१६. ॐ धन्यायै नमः	४३. ॐ पद्माक्ष्यै नमः	७०. ॐ विश्वजनन्यै नमः	९७. ॐ देव्यै नमः
१७. ॐ हिरण्मय्यै नमः	४४. ॐ पद्मसुंदर्यै नमः	७१. ॐ तुष्ट्यै नमः	९८. ॐ विष्णु वक्षःस्थल स्थितायै नमः
१८. ॐ लक्ष्म्यै नमः	४५. ॐ पद्मोद्भवायै नमः	७२. ॐ दारिद्र्य नाशिन्यै नमः	९९. ॐ विष्णुपत्न्यै नमः
१९. ॐ नित्यपुष्टायै नमः	४६. ॐ पद्ममुख्यै नमः	७३. ॐ प्रीतिपुष्करिण्यै नमः	१००. ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः
२०. ॐ विभावर्यै नमः	४७. ॐ पद्मनाभप्रियायै नमः	७४. ॐ शान्तायै नमः	१०१. ॐ नारायण समाश्रितायै नमः
२१. ॐ अदित्यै नमः	४८. ॐ रमायै नमः	७५. ॐ शुक्लमाल्याम्बरायै नमः	१०२. ॐ दारिद्र्य ध्वंसिन्यै नमः
२२. ॐ दित्यै नमः	४९. ॐ पद्ममालाधरायै नमः	७६. ॐ श्रियै नमः	१०३. ॐ सर्वोपद्रव वारिण्यै नमः
२३. ॐ दीप्तायै नमः	५०. ॐ देव्यै नमः	७७. ॐ भास्कर्यै नमः	१०४. ॐ नवदुर्गायै नमः
२४. ॐ वसुधायै नमः	५१. ॐ पद्मिन्यै नमः	७८. ॐ बिल्वनिलयायै नमः	१०५. ॐ महाकाल्यै नमः
२५. ॐ वसुधारिण्यै नमः	५२. ॐ पद्मगंधिन्यै नमः	७९. ॐ वरारोहायै नमः	१०६. ॐ ब्रह्म विष्णु शिवात्मिकायै नमः
२६. ॐ कमलायै नमः	५३. ॐ पुण्यगंधायै नमः	८०. ॐ यशस्विन्यै नमः	१०७. ॐ त्रिकाल ज्ञान संपन्नायै नमः
२७. ॐ कांतायै नमः	५४. ॐ सुप्रसन्नायै नमः	८१. ॐ वसुंधरायै नमः	१०८. ॐ भुवनेश्वर्यै नमः

Champalal Bansilalji Jaju (मालेगांव वाले) Shailesh Jaju
Rupali Agency
FOOD PRODUCT MATERIAL SUPPLIERS
Near Radhika Lodge, Tapkir Lane, Adat Bazar, Ahmednagar - 414 001.
Tel: 0241-2343060, 9822843060 E-mail: rupaliagency@gmail.com

पृष्ठ ९ से... इस भू-भाग को महाभारत के वन पर्व में सिंधु-सौवीर कहकर सम्बोधित किया गया है। पाण्डु पुत्र नकुल ने अपने पश्चिम दिग्विजय में मरुभूमि, सरस्वती की घाटी, सिंध आदि प्रांत को विजित कर लिया था, यह महाभारत के सभा पर्व के अध्याय ३२ में वर्णित है। मरुभूमि आधुनिक मारवाड़ का ही विस्तृत क्षेत्र है।

प्रागैतिहासिक काल: प्रदेश में उपलब्ध वेलोजोइक, मेसोजोइक, एवं सोनाजाइक कालीन अवशेष भू-वैज्ञानिक दृष्टि से इस प्रदेश की प्रागैतिहासिक कालीन स्थिति को प्रमाणित करते हैं। प्राचीन काल में इस संपूर्ण क्षेत्र को ज्यूटालिक चट्टानों के अवशेष यहाँ समुद्र होने का प्रमाण देते हैं, यहाँ से विस्तृत मात्रा में जीवाश्मों की होने वाली प्राप्ति में भी यहाँ समुद्र होने का प्रमाण मिलता है, यहाँ मानव ने रहना तब से प्रारंभ किया था जब यह प्रदेश सागरीय जल से मुक्त हो गया, जैसलमेर क्षेत्र की मुख्य भूमि में अभी तक कोई उत्खनन कार्य नहीं हुआ है, परंतु इसके पश्चिम में मोहनजोदाड़ो व हड़प्पा, उत्तर-पूर्व में कालीबंगा व पूर्वी क्षेत्र में सरस्वती के उत्खनन ने यह स्पष्ट कर दिया है कि इस क्षेत्र में आदि मानव का अस्तित्व अवश्य रहा होगा।

शासक

जैसलमेर के शासक गडसीसर सरोवर, जैसलमेर राज्य की स्थापना भारतीय इतिहास के मध्यकाल के प्रारंभ में ११७८ ई. के लगभग यदुवंशी भाटी के वंशज रावल-जैसल के द्वारा की गयी। भाटी मूलत: इस प्रदेश के निवासी नहीं थे, यह अपनी जाति की उत्पत्ति मथुरा व द्वारिका के यदुवंशी इतिहास पुरुष कृष्ण से मानते थे। कृष्ण के उपरांत द्वारिका के जलमग्न होने के कारण कुछ बचे हुए यदु लोग जाबुलिस्तान, ग़ज़नी, काबुल व लाहौर के आस-पास के क्षेत्रों में फैल गए थे, वहाँ इन लोगों ने बाहुबल से अच्छी ख्याति अर्जित की थी, परंतु मध्य एशिया से आने वाले तुर्क आक्रमणकारियों के सामने ये ज्यादा नहीं टिक सके और लाहौर होते हुए पंजाब की ओर अग्रसर होते हुए भटनेर नामक स्थान पर अपना राज्य स्थापित किया, उस समय इस भू-भाग पर स्थानीय जातियों का प्रभाव था, अत: ये भटनेर से पुन: अग्रसर होकर सिंध मुल्तान की ओर बढ़े। अन्तोगत्वा मुमणवाह, मारोठ, तपोट, देरावर आदि स्थानों पर अपने मुकाम करते हुए थार मरुस्थल स्थित परमारों के क्षेत्र में लोद्रवा नामक शहर के शासक को पराजित यहाँ अपनी राजधानी स्थापित की, इस भू-भाग में स्थित स्थानीय जातियों जिनमें परमार, बराह, लंगा, भूटा, तथा सोलंकी आदि प्रमुख थे, इनसे सतत संघर्ष के उपरांत भाटी लोग इस भू-भाग को अपने आधीन कर सके थे, वस्तुत: भाटियों के इतिहास का यह संपूर्ण काल सत्ता के लिए संघर्ष का काल नहीं था, वरन् अस्तित्व को बनाए रखने के लिए संघर्ष था, जिसमें ये लोग सफल हो गए।

चित्रकला: चित्रकला की दृष्टि से जैसलमेर का विशिष्ट स्थान है, भारत के पश्चिम 'थार' मरुस्थल क्षेत्र में विस्तृत इस नगर में दूर तक मरु के टीलों का विस्तार है, वहीं कला संसार का खज़ाना भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। प्राचीन काल से ही व्यापारिक स्वर्णिम मार्ग के केन्द्र में होने के कारण जैसलमेर ऐश्वर्य, धर्म एवं सांस्कृतिक अवदान के लिए प्रसिद्ध रहा है, जैसलमेर में स्थित सोनार क़िला, चिन्तामणि पार्श्वनाथ जैन मंदिर (१४०२-१४१६ ई.), सम्भवनाथ जैन मंदिर (१४३६-१४४० ई.), शांतिनाथ-कुन्थुनाथ जैन मंदिर (१४८० ई.), चन्द्रप्रभु जैन मंदिर तथा अनेक वैष्णव मंदिर धर्म के साथ-साथ कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। १८वीं-१९वीं शताब्दी में बनी जैसलमेर की प्रसिद्ध हवेलियाँ तो स्थापत्य कला की बेजोड़ मिसाल है, इन हवेलियों में बने भित्ति चित्र काफ़ी सुंदर हैं। सालिम सिंह मेहता की हवेली, पटवों की हवेली, नथमल की हवेली तथा क़िले के प्रासाद और बादल महल आदि ने जैसलमेर की कलात्मकता को आज संसार भर में प्रसिद्ध कर दिया है। जैसलमेर में चित्रकला के निर्माण, सचित्र ग्रंथों की नकल एवं प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के संरक्षण के लिए जितना योगदान रहा है, उतना किसी अन्य स्थान का नहीं, जब आक्रमणकारी भारतीय स्थापत्य कला एवं पांडुलिपियों को नष्ट कर रहे थे, **शेष पृष्ठ ११ पर...**

ZILLION
Led Lighting, Automation, Energy & Electrical Solutions Partner

- Led Lighting – Bespoke, Architectural, Landscape & Industrial
- Industrial IoT – Vision, Traceability & Digitization
- Power Quality Solutions
- Flameproof Ex-D

Zillion Products Private Limited | 1376, 7th Street, Golden Colony, Anna Nagar West Ext., Chennai - 600050
Zillionproducts.in | Evolite.in | sales@zillionproducts.com | +919940204647
evolite K-LiTE HAVELLS ZillionEdge SUDHIR POWER
Group Leadership: Shri Gulab Chand Bhatera
Group Concerns: Kamakshi International Trade | Tanishk Steel Industries

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

पृष्ठ १० से... उस समय भारत के सुदूर मरुस्थली पश्चिमांचल में 'जैसलमेर' का त्रिकुटाकार दुर्ग उनकी रक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान समझा गया, इसलिए संभात, पारण, गुजरात, अलध्यापुर एवं राजस्थान के अन्य भागों से प्राचीन साहित्य, कला की सामग्री को क़िले के जैन मंदिरों के तलघरों में सुरक्षित रखा गया।

बालू रेत से बनी अति प्राचीन चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा

जैसलमेर के चित्रों में सामान्यत: लाल (हरिमिजीलाल), गहरा हरा और पीला, नारंगी रंगों का प्रयोग हुआ है, इन चित्रों में रंगों को अधिक महत्त्व न देकर भावों की सजीवता व सौन्दर्य पर बल दिया गया है, 'जैसलमेर' के महारावल बैरीला ने चित्रकला को सदैव प्रोत्साहित किया, उसके राजदरबार में अनेक कलाकारों को प्रश्रय प्राप्त था। जैसलमेर में चित्रकला के निर्माण, सचित्र ग्रंथों की नकल एवं प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के संरक्षण के लिए जितना योगदान रहा है, उतना किसी अन्य स्थान का नहीं रहा। जब आक्रमणकारी भारतीय स्थापत्य कला एवं पांडुलिपियों को नष्ट कर रहे थे, उस समय भारत के सुदूर मरुस्थली पश्चिमांचल में जैसलमेर का त्रिकुटाकार दुर्ग उनकी रक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान समझा गया। इसलिए संभात, पारण, गुजरात, अलध्यापुर एवं राजस्थान के अन्य भागों से प्राचीन साहित्य, कला की सामग्री को क़िले के जैन मंदिरों के तलघरों में सुरक्षित रखा गया।

जैसलमेर की भाषा: राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में बोली जाने वाली मारवाड़ी भाषा का ही एक भाग है, परन्तु 'जैसलमेर' क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा थली या थार के रेगिस्तान की भाषा है, इसका स्वरूप राज्य के विभिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न है, उदाहरण स्वरूप लेखा, महाजलार के इलाक़े में मालानी घाट व माड़ भाषाओं का मिश्रण बोला जाता है, परगना सम, सहागढ़ व घोटाडू की भाषा में थाट, माड़ व सिंधी भाषा का मिश्रण बोल-चाल की भाषा है। विसनगढ़, खूडी, नाचणा आदि परगनों में जो बहावलपुर, सिंध से संलग्न है, माड़, बीकानेरी व सिंधी भाषा का मिश्रण है, इसी प्रकार लाठी, पोकरण, फलौदी के क्षेत्र में घाट व माड़ भाषा का मिश्रण है। राजस्थान राजधानी में बोली जाने वाली इन सभी बोलियों में मिश्रण है, जो घाट, माड़, सिंधी, मालाणी, पंजाबी, गुजराती भाषा का सुंदर मिश्रण है।

जैसलमेर की कशीदाकारी: जैसलमेर ज़िले में दूर-दराज गाँवों में ग्रामीण महिलाओं द्वारा कपड़े पर कशीदाकारी का कार्य बड़ी बारीकी से किया जाता है, बारीक सुई से एक-एक टांका निकालकर विभिन्न रंगों के धागों एवं ज़री से किया जाने वाला यह कशीदाकारी कार्य पुश्तैनी हयह कशीदाकारी जीविकोपार्जन के लिए ही नहीं, वरन् स्वयं के पहनावे को आर्कषक बनाने तथा सौंदर्य में वृद्धि के लिए भी आवश्यक है, पीढ़ी-दर-पीढ़ी महिलाएँ यह कार्य करती आई हैं, यह कार्य ग्रामीणांचलों की महिलाओं की विशेष अभिरुचि का प्रतीक है जिसके लिए वे पारिवारिक कार्यों से अधिकतम समय निकालती हैं। जैसलमेर की कशीदाकारी महिलाओं द्वारा अपने सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखते हुए जीवन-यापन का माध्यम भी है, यह कार्य सामान्यतः वस्त्र बेचने के उद्देश्य से नहीं किया जाता, परन्तु अब पर्यटन के विकास एवं विस्तार के कारण इसकी माँग काफ़ी बढ़ गई है, ऐसे कशीदाकारी वस्त्रों की माँग विदेशों में ख़ासकर बढ़ी है, इससे राजस्थानी संस्कृति विदेशों में प्रसिद्ध करती जा रही है।

जैसलमेर की स्थापत्य कला: 'जैसलमेर' के सांस्कृतिक इतिहास में यहाँ के स्थापत्य कला का अलग ही महत्त्व है, किसी भी स्थान विशेष पर पाए जाने वाले स्थापत्य से वहाँ रहने वालों के चिंतन, विचार, विश्वास एवं बौद्धिक कल्पनाशीलता का आभास होता है। 'जैसलमेर' में स्थापत्य कला का क्रम राज्य की स्थापना के साथ दुर्ग निर्माण से आरंभ हुआ, जो निरंतर चलता रहा, यहाँ के स्थापत्य को राजकीय तथा व्यक्तिगत दोनों का सतत प्रश्रय मिलता रहा, इस क्षेत्र के स्थापत्य की अभिव्यक्ति यहाँ के क़िलों, गढियों, राजभवनों, मंदिरों, हवेलियों, जलाशयों, छतरियों व जन-साधारण के प्रयोग में लाये जाने वाले मकानों आदि से होता है, जैसलमेर नगर में हर २०-३० किलोमीटर के फासले पर छोटे-छोटे दुर्ग दृष्टिगोचर होते हैं, ये दुर्ग विगत १००० वर्षों के इतिहास के मूक गवाह हैं।

जैसलमेर का साहित्य: मरु संस्कृति का प्रतीक जैसलमेर कला व साहित्य का केन्द्र रहा है, हमारी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने में एक प्रहरी की तरह कार्य किया है। जैन श्रुति की विक्रम संवत् १५०० खतर गच्छाचार्य जिन भद्रसूरि के निर्देशानुसार व जैसलमेर के महारावल चाचगदेव के समय गुजरात स्थल पारण से जैन ग्रंथों का बहुत बड़ा भण्डारा जैसलमेर दुर्ग में स्थानान्तरित किया गया था, अन्य जनश्रुति के अनुसार यह संग्रह चंद्रावलि नामक नगर का मुस्लिम आक्रमण में पूर्णत: ध्वस्त होने पर सुरक्षित स्थान की तलाश में यहाँ लाया गया, इस विशाल संग्रह को अनेक जैन मुनि, धर्माचार्यों, श्रावकों एवं विदुषी साध्वियों द्वारा समय-समय पर अपनी उत्कृष्ट रचनाओं द्वारा बढ़ावा दिया गया, यहाँ रचे गए अधिकांश ग्रंथों पर उस समय के शासकों के नाम, वंश, समय आदि का वर्णन किया गया है, यहाँ रखे हुए ग्रंथों की कुल संख्या २६८३ है, जिसमें ४२६ पत्र लिखे है, यहाँ तामपत्र पर उपलब्ध प्राचीनतम ग्रंथ विक्रम संवत् १११७ का है तथा हाथ से बने काग़ज़ पर हस्तलिखित ग्रंथ विक्रम संवत् १२७० का है, इन ग्रंथों की भाषा प्राकृत, मागधी, संस्कृत, अपभ्रंश तथा ब्रज है। यहाँ पर जैन ग्रंथों के अलावा कुछ जैनत्तर साहित्य की भी रचना हुई, जिनमें काव्य, व्याकरण, नाटक, श्रृंगार, सांख्य, मीमांसा, न्याय, विषशास्त्र, आयुर्वेद, योग इत्यादि कई विषयों शेष पृष्ठ १२ पर...

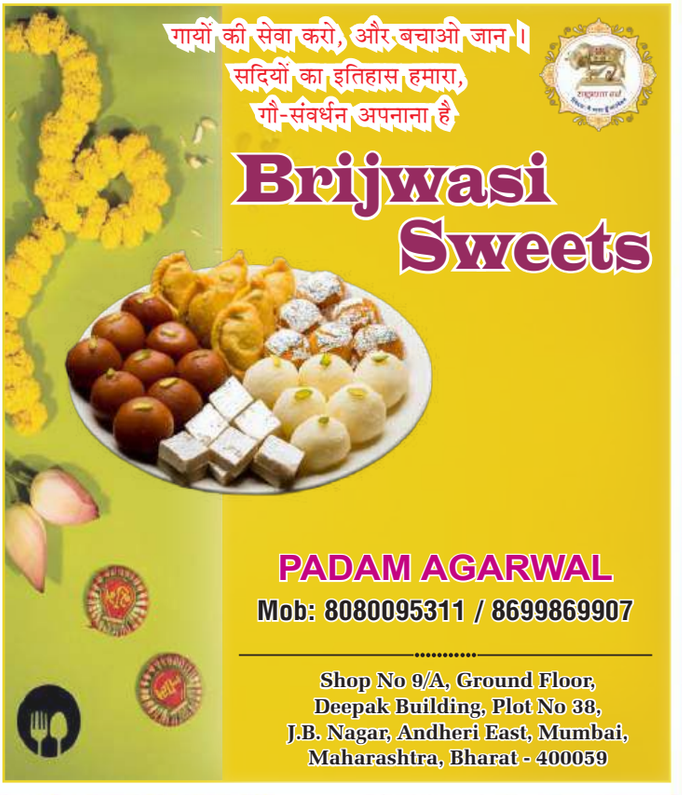

शेष पृष्ठ ११ से... पर उत्कृष्ट रचनाओं का मुख्य स्थान है।

संगीत: लोक संगीत की दृष्टि से 'जैसलमेर' नगर का विशिष्ट स्थान रहा है, यहाँ के जनमानस ने इस शुष्क भू-धरा पर मन को बहलाने हेतु अत्यंत ही सरस व भावप्रद

गीतों की रचना की, इन गीतों में लोक गाथाओं, कथाओं, पहेली, सुभाषित काव्य के साथ-साथ वर्षा, सावन तथा अन्य मौसम, पशु-पक्षी व सामाजिक संबंधों की भावनाओं से ओतप्रोत हैं। लोकगीत के जानकारों व विशेषज्ञों के मतों के अनुसार 'जैसलमेर' के लोकगीत बहुत प्राचीन, परंपरागत और विशुद्ध हैं, जो बंधे-बंधाये रूप में अद्यपर्यन्त गाए जाते हैं।

पोकरण, जैसलमैर

धर्म: भारतवर्ष की भूमि सदैव से धर्म प्रधान रही है, यहाँ पर धर्म के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। 'जैसलमेर' राज्य का विस्तार भू-भाग भी इस भावना से मुक्त नहीं रहा, इस क्षेत्र के सर्वप्रथम राव तणू द्वारा 'तणोट' नामक स्थान बसाने तथा वहाँ देवी का मंदिर बनाने का उल्लेख प्राप्त होता है, यह देवी का मंदिर आज भी विद्यमान है, हालांकि इस मंदिर में कोई स्मारक व लेख प्राप्त नहीं होता, किन्तु प्रत्येक जन के इतिहास के माध्यम से यह मंदिर राव तणू के पिता राव केहर के समय का माना जाता है और इस क्षेत्र में इसकी बहुत ही मान्यता है।

भारत-पाक युद्ध १९६५ के बाद तो भारतीय सेना व सीमा सुरक्षा बल की भी यह आराध्य देवी हो गई व उनके द्वारा नवीन मंदिर बनाकर मंदिर का संचालन भी सीमा सुरक्षा बल के आधीन है।

देवी को शक्ति रूप में इस क्षेत्र में प्राचीन समय से पूजते आये हैं। रावल देवराज (८५३ से ९७४ ई.) के राज्य उच्युत होने पर नाथपंथ के एक योगी की सहायता से पुनः राज सत्ता पाने व देरावर नामक स्थान पर अपनी राजधानी स्थापित करने के कारण भाटी वंश तथा राज्य में नाथवंश को राज्याश्रय प्राप्त हुआ तथा जैसलमेर में नाथवंश की गद्दी की स्थापना हुई, जो कि राजवंश के साथ-साथ राज्य के स्वत्रंत भारत में विलीनीकरण के समय तक मौजूद रहा।

व्यापार और उद्योग: यह शहर ऊन, चमड़ा, नमक, मुलतानी मिट्टी, ऊँट और भेड़ का व्यापार करने वाले कारवां का प्रमुख केंद्र है। मध्यकाल में तो यह शहर एक प्रमुख व्यापारिक वाणिज्यिक केन्द्र के रूप में विख्यात रहा है, यहाँ से होकर सौदागरों का कारवाँ हुई अफ़ग़ानिस्तान से भी आगे तक जाता और वहाँ से आता था, वह काल तो इस नगरी के उत्थान का 'स्वर्णकाल' था आज भी इस नगरी के पूरे क्षेत्र में अतीत का प्रभाव झलकता दिखाई देता है।

कृषि और खनिज

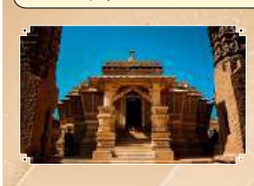

ज्वार और बाजरा यहाँ की मुख्य फ़सलें हैं। बकरी, ऊँट, भेड़ और गायों का प्रजनन बड़े

पैमाने पर किया जाता है, चूना पत्थर, मुलतानी मिट्टी और जिप्सम का खनन होता है।

यातायात और परिवहन

यह शहर जोधपुर, बाड़मेर तथा फलोदी से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है।

शिक्षा

यहाँ श्री सांगीदास बालकृष्ण गवर्नमेंट कॉलेज नामक एक महाविद्यालय है।

जनसंख्या

जैसलमेर शहर की जनसंख्या (२००१ की गणना के अनुसार) ५८,२८६ है। जैसलमेर ज़िले की कुल जनसंख्या ५,०७,९९९ है।

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें
Remove INDIA Name From The Constitution
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

जैसलमेर में पर्यटन स्थल

जैसलमेर शहर के निकट एक पहाड़ी पर बने हुए इस दुर्ग में राजमहल, कई प्राचीन जैन मंदिर और ज्ञान भंडार नामक एक पुस्तकालय है, जिसमें प्राचीन संस्कृत तथा प्राकृत पांडुलिपियाँ रखी हुई हैं, इसके आसपास का क्षेत्र, जो पहले एक रियासत था, लगभग पूरी तरह रेतीला बंजर इलाक़ा है और थार मरुस्थल का एक हिस्सा है। यहाँ की एकमात्र काकनी नदी काफ़ी बड़े इलाक़े में फैल कर भिज झील का निर्माण करती है। जैसलमेर, ज़िले का प्रमुख नगर हैं जो नक़्क़ाशीदार हवेलियों, गलियों, प्राचीन जैन मंदिरों, मेलों और उत्सवों के लिये प्रसिद्ध है, निकट ही गाँव में रेत के टीलों का पर्यटन की दृष्टि से विशेष महत्त्व है, यहाँ का 'सोनार क़िला' राजस्थान के श्रेष्ठ धनवान दुर्गों में माना जाता हैं।

पर्यटन स्थल

जैसलमेर क़िला, सोनार क़िला, कलात्मक हवेलियाँ, गडसीसर जलाशय एवं टीला की पोल, बादल विलास, जवाहर विलास, अमरसागर, बड़ाबाग, मूल सागर, गजरूप सागर, लौद्रवा सम के टीले, पोकरण, रामदेवरा, तनोट, मरुभूमि राष्ट्रीय उद्यान, आंकल वुड फॉसिल पार्क

जैसलमेर के प्रमुख ऐतिहासिक स्मारकों में सर्वप्रमुख यहाँ का क़िला है। यह ११५५ ई. में निर्मित हुआ था, यह स्थापत्य का सुंदर नमूना है। इसमें बारह सौ घर हैं।

१५वीं सदी में निर्मित जैन मंदिरों के तोरणों, स्तंभों, प्रवेशद्वारों आदि पर जो बारीक नक़्क़ाशी व शिल्प प्रदर्शित हैं, उन्हें देखकर दाँतों तले अँगुली दबानी पड़ती है। कहा जाता है कि जावा, बाली आदि प्राचीन सनातनी व बौद्ध उपनिवेशों के स्मारकों में जो भारतीय वास्तु व मूर्तिकला प्रदर्शित है, उससे जैसलमेर के जैन मंदिरों की कला का अनोखा साम्य है।

क़िले में लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर अपने भव्य सौंदर्य के लिए प्रख्यात है।

नगर से चार मील दूर 'अमरसागर' के मंदिर में मक़राना के संगमरमर की बनी हुई जालियाँ हैं। विदित हो कि जैसलमेर की पुरानी राजधानी 'लोद्रवापुर' थी, जहाँ पुराने खंडहरों के बीच केवल एक प्राचीन जैनमंदिर ही काल-कवलित होने से बचा है, यह केवल एक सहस्त्र वर्ष प्राचीन है।

अमरसागर

जैसलमेर से लगभग सात किलोमीटर पश्चिम दिशा में अमरसागर महल स्थित है जो बहुत प्रसिद्ध है। सन १८७१ में 'बाफना हिम्मत राम' ने तालाब के किनारे

अमरसागर तालाब

सुन्दर जैन मंदिर स्थापित कराया था, अमरसागर का निर्माण महारावल अमरसिंह ने विक्रमी संवत १७४८ में कराया था।

अमरसागर जैन मंदिर

अगर आप पुराने मंदिर की नक्काशी का अनुभव करना चाहते हैं, तो अमर सागर जैन मंदिर ज़रूर घूमने की जगह है। यह एक सुंदर मंदिर है जिसे पटवा सेठ हिम्मत राम बाफना ने १९२८ में इंसानों के बनाए पानी के तालाब अमर सागर के किनारे बनवाया था।

यह मंदिर अमर सागर कॉम्प्लेक्स का हिस्सा है, जिसमें कई छोटी झीलें और तालाब भी हैं, जो इसे शांत माहौल देते हैं। इसके सुंदर डिज़ाइन और पीले बलुआ पत्थर पर बारीक काम उस ज़माने की कारीगरी को दिखाते हैं। यह मंदिर अपने बेहतरीन नक्काशी वाले खंभों और दीवारों के लिए जाना जाता है जो जैन धर्मग्रंथों की कहानियाँ बताते हैं।

अमर सागर जैन मंदिर जैसलमेर में जैन समुदाय के **शेष पृष्ठ १४ पर...**

स्वर्ण नगरी जैसलमेर के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Manoj Kumar Bisani
9176865088

Praful Kumar Bisani
8838689227

Madan Mohan Malpani
9841221081

BICO FABRICS

Mfrs. & Wholesale Dealers of: Dress Materials, Fancy Salwar Suits & Handloom Suits

Al - 95, 2nd St., 8th Main Road, Opp. Anna Adarsh College, Shanti Colony, Anna Nagar, Chennai, Bharat - 600040.

पृष्ठ १३ से... लिए भक्ति की जगह के तौर पर बनाया गया था और यह अपने आर्किटेक्चर, शांत माहौल और ऐतिहासिक महत्व के कारण एक खास आकर्षण बन गया है।

गडसीसर सरोवरः गडसीसर जलाशय एवं टीला की पोल राजस्थान राज्य के जैसलमेर शहर में स्थित है। जैसलमेर शहर के प्रवेश मार्ग पर स्थित पवित्र

गडसीसर सरोवर

'गडसीसर सरोवर' अपने कलात्मक प्रवेश द्वार, जलाशय के मध्य स्थित सुन्दर छतरियों व इसके किनारे बनी बगीचियों के कारण प्रसिद्ध है। जैसलमेर के इस कृत्रिम सरोवर का निर्माण 'रावल गडसीसिंह' ने सन् १३४० ई. में कराया था, गडसीसर सरोवर में नौका विहार की सुविधा भी उपलब्ध है, सन १९६५ से पहले यही सरोवर जैसलमेरवासियों का प्रमुख पेयजल स्रोत भी था।

लाइट एवं साउंड शो 'गड़ीसर झील' लेज़र वाटर शो में 'जैसलमेर' दुर्ग के निर्माण पटकथा, आक्रांताओं का दुर्ग पर आक्रमण, जैसलमेर के वीरों के पराक्रम और बलिदान की गाथा, तनोट माता के मंदिर का दृश्य, रामदेवरा मंदिर के दृश्य, लोद्रुवा मंदिरों का छायांकन, लक्ष्मी नारायण मंदिर के दृश्य, लोंगोवाल के युद्ध के दृश्य, गड़ीसर लेक पर पानी की बूंदो से निर्मित स्क्रीन पर ३ डी वीडियो प्रोजेक्शन मैपिंग के माध्यम से दिखाया गया है, इसके साथ ही राजस्थानी गीतों पर संगीतमय फव्वारों का नृत्य भी दिखाया गया है।

जैसलमेर सरकारी संग्रहालयः पुरातत्व और संग्रहालय विभाग द्वारा स्थापित यह संग्रहालय जैसलमेर आने वाले पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षण का केन्द्र

जैसलमेर सरकारी संग्रहालय

है, सबसे मुख्य यहाँ प्रदर्शित राजस्थान के राज्य पक्षी 'गोडावण' की ट्रॉफी है, यहाँ पर ७वीं और ९वीं शताब्दी ईस्वी की परम्परागत घरेलू वस्तुओं, रॉक-कट क्रॉकरी, आभूषण और प्रतिमाएं शहर के समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के अवशेष प्रदर्शित हैं।

जैसलमेर वॉर म्यूज़ियमः यदि आपने आज खाना खाया तो आप किसान

जैसलमेर वॉर म्यूज़ियम

को धन्यवाद दीजिए और यदि शांति से खाना खाया तो सैनिक को धन्यवाद दीजिए। हमारी सेना और सुरक्षा बल अपना जीवन रोज़ाना मुश्किलें और परेशानियों झेलकर गुज़ारते हैं ताकि भारत के नागरिक चैन की नींद सो सकें। जैसलमेर के मिलिट्री बेस पर एक ऐसा म्यूज़ियम बनाया गया है, जहाँ हम आदर के साथ उन सैनिकों को धन्यवाद देते हुए उन्हें सम्मान दे सकें, इस म्यूजियम को बड़े सलीक़े से सजाया गया है, यहाँ प्रदर्शित प्रत्येक वस्तु उन सैनिकों के बलिदान को मूर्तरूप से उजागर करती है, जिन्होंने सन् १९६५ के भारत-पाक युद्ध तथा सन् १९७१ में हुए लोंगेवाला युद्ध के दौरान अपना जीवन कुर्बान किया था, म्यूज़ियम के दर्शन करने से आपको भारतीय सेना द्वारा अधिग्रहीत टैंक तथा युद्ध में काम आए अन्य साज़ो-सामान देखने को **शेष पृष्ठ १५ पर...**

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

Rajkumar Daga
Mob: 9810110016/ 9868230319

Ashok Daga
Mob: 9811044982

Nikunj Udyog

Distributor: JSW Steel Ltd.
Distributor: Rathi Steel
Auth.Dealer: Steel Authority of India Ltd.

Office: Railway Station Road, Opp.
Sector-4, Gurugram-122006 Tel: 0124-2250106

Corporate Office:
3C, Vandhana Building,11, Tolstoy Road,
Connaught Place, New Delhi-110001 Tel: 40518300
Email: rkd@dagagroup.co.in Website: www.dagagroup.co.in
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पृष्ठ १४ से... मिलेंगे जो आपको गौरवान्वित कर देगा, यहाँ एक ऑडियो विज़ुअल कक्ष भी है, जिसमें आपको युद्ध सम्बन्धी फिल्में दिखाई जाती हैं। लोंगेवाला युद्ध में महत्वपूर्ण रूप से भागीदारी निभाने वाले मेज़र कुलदीप सिंह चंदपुरी का इन्टरव्यू भी आप यहाँ देख सकते है, जिसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार हमारे सैनिकों ने किस बहादुरी के साथ लोंगेवाला युद्ध लड़ा था, इस म्यूज़ियम में बहुत सी वॉर ट्रॉफीज़, पुराने उपकरण, टैंक, बन्दूकें, लड़ाकू गाड़ियाँ तथा हथियार प्रदर्शित किए गए हैं, एयर-फोर्स द्वारा उपहार स्वरूप दिया गया 'हन्टर-एयरक्राफ्ट' जो कि लोंगेवाला युद्ध के दौरान सन् १९७१ के भारत-पाक युद्ध में काम में लिया गया था, भी यहाँ देखा जा सकता है, हमारे देश के महत्वपूर्ण युद्ध इतिहास को संजोए हुए यह म्यूज़ियम जैसलमेर-जोधपुर हाइवे पर स्थित है तथा इसमें फ्री-एन्ट्री, निःशुल्क प्रवेश है, यानि इसे देखने का कोई टिकिट/चार्ज़ नहीं लगता।

लोंगेवाला वॉर मेमोरियल

पश्चिमी क्षेत्र में सन् १९७१ के भारत-पाक युद्ध के दौरान, 'लोंगेवाला' का

युद्ध सबसे बड़ा साहसिक कार्य था तथा यह अजेय-बाधाओं को पार करते हुए, हिम्मत और बहादुरी से की गई जंग की प्रेरणादायी कहानी है, यह इतिहास ४ दिसम्बर १९७१ को बनाया गया 'बहादुरी और शौर्य' का उदाहरण, जब भारतीय सैनिकों ने पाक के लगभग २००० सैनिकों और ६० टैंकों को खदेड़ दिया, 'लोंगेवाला' में हमारे डैज़र्ट कॉप्स ने 'लोंगेवाला वॉर मेमोरियल' अपनी उस जीत का जश्न मनाने के लिए बनाया, जिसमें उन्होंने अपने दृढ़ संकल्प से पाक की फौजों का भारतीय सीमा के अन्दर घुसने का प्रयास विफल कर दिया 'मेरा राजस्थान' पत्रिका के प्रबुद्ध पाठक जब इस म्यूज़ियम को देखेंगे तो हमारे बहादुर जवानों की वीरता, शौर्य और पराक्रम के उदाहरण देखकर गौरवान्वित महसूस करेंगे।

मंदिर पैलेस: इसे 'ताज़िया टॉवर' भी कहते हैं, बिल्कुल ताज़िए के रुप में यह

महल, एक के ऊपर एक मंजिल के साथ खड़ा है, दो सौ साल तक यह 'महल जैसलमेर' के शासकों का निवास स्थान था, इसके 'बादल विलास' नाम के हिस्से को, शहर की सबसे ऊँची इमारत माना जाता है। बादल महल (क्वाउड पैलेस) की पांच मंजिली वास्तु संरचना को इसके पगोड़ा सृदशा ताज़िया टॉवर द्वारा आगे बढ़ाया गया है, महल की प्रत्येक मंजिल में एक अद्भुत नक्क़ाशीदार छज्जा है। 'बादल पैलेस' मुस्लिम कारीगरों की कला कौशल का एक बेहतरीन नमूना है, जिसमें ताज़िया के आकार में टॉवर को ढाला गया है, अब यह मंदिर पैलेस पर्यटकों के लिए, हैरिटेज होटल के रूप में संचालित किया जा रहा है, जहाँ रहकर पर्यटक स्वयं को महाराजा और महारानी महसूस करते हैं।

ज्ञान भंडार: जैसलमेर में लगभग सात ज्ञान भंडार हैं, जिनमें 'जिन भद्रसूरि ज्ञान भंडार' सबसे बड़ा और वृद्ध सामग्री का आगार है, इसलिए इसे बड़े भंडार के नाम से पुकारते हैं, इस भंडार में लगभग ४०० से अधिक ताड़फीय ग्रंथ, लगभग २३०० हस्तलिखित काग़ज़ के ग्रंथ और अनेक चित्र पट्टिकाएँ उपलब्ध हैं, उपर्युक्त ग्रंथों में अनेक सचित्र ग्रंथ हैं जिनके माध्यम से भारतीय चित्रकला के विकास की अनेक कड़ियाँ जोड़ी जा सकती हैं।

कुलधरा: पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा इन गाँवों का निर्माण लगभग १३वीं शताब्दी में माना जाता है, इन गाँवों के खण्डहरों को **शेष पृष्ठ १६ पर...**

With best compliments

Ravi Bagadia
Mob: 9022353246

Kishan Bagadia
Mob: 9869281024

Balaji
Estate Agency

Trusted Name in Real Estate for
Residence... Commercial...
Industrial Property

RERA No. A51800030283

Shop No.3, Sai Ram Apartment, Near Ram Mandir Station,
Goregaon West, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 104
Email Id: balajiestateagency21@gmail.com

पृष्ठ १५ से... देख कर लगता है कि इनकी बहुत ही बढ़िया वास्तुकला रही होगी। सुनसान जंगल के बीच, काफी बड़े क्षेत्र में फैले, खण्डहरों में आधी अधूरी दीवारें, दरवाज़े, खिड़कियाँ दिखाई देती हैं, मध्ययुगीन ८४ गांव थे जिनको पालीवाल ब्राह्मणों ने रातों रात छोड़ दिया था, उनमें से दो सबसे प्रमुख 'कुलधरा' और 'खावा', जैसलमेर के दक्षिण पश्चिम से क्रमशः लगभग १८ और ३० किलोमीटर दूर स्थित है। 'कुलधरा और खावा' के खंडहर उस युग की वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, इनके बारे में अनेक किवदंतियां प्रचलित हैं, लेकिन इस सम्बन्ध में कोई भी सच ज्ञात नहीं है कि बड़े पैमाने पर गांवों का पलायन क्यों हुआ? ग्रामीणों का मानना है कि यह जगह शापित है और आतंक के डर से यहां बसावट नहीं होती, वर्तमान में यह स्थान एक प्रमुख पर्यटन आकर्षण है, 'जैसलमेर' घूमने आने वाले पर्यटक इन गाँवों की कहानियाँ सुनकर, यहाँ देखने ज़रूर आते हैं।

कैमल सफारी

'ऊँट' रेगिस्तान का जहाज़ माना जाता है, यहाँ बहुत से विश्वसनीय सफारी टूर ऑपरेटर्स हैं, जिनसे आप एक दिवसीय दौरे का पैकेज ले सकते हैं या गांवों में रात में ठहरने के लिए प्रोग्राम चुन सकते हैं, अधिकांश सफारी के साथ भोजन और पानी की सुविधा उपलब्ध रहती है।

जैसलमेर के सम पर लिखी जाती हैं कहानियाँ

सम सैण्ड ड्यून्स यानी सम के सुनहरी रेत के धोरे शहर से ४० कि.मी. दूर पर्यटकों के लिए सर्वाधिक आनन्दित कर देने वाला स्थान है 'सम'। 'सम' एक गाँव है, जो कभी आँधियों में धोरों के बीच दब जाता था, आज का सम, केवल तेज़ गर्मी के मौसम के अलावा, पर्यटकों, ऊँटों, ऊँट गाड़ियों और जीपों की आवाजों से गुंजायमान रहता है। शहरी भीड़भाड़ से दूर, विशाल थार रेगिस्तान के हृदय में, राजस्थान को उसके वास्तविक रूप में अनुभव करने का यहां सुनहरा

सम सैण्ड ड्यून्स

मौक़ा रहता है। शानदार आकाश के नीचे कैम्पिंग, आपको दिव्य आश्चर्यों से भर देती है। संध्या के समय अपने पैरों के नीचे ठंडी रेत महसूस करें और सांस्कृतिक प्रदर्शन का आनंद ले। 'जैसलमेर' के रेत के टीलों के बीच डेरा डाले हुए रोमांच और शान्ति का एक प्रभावशाली समन्वय, वास्तव में यह एक तरह का अलग अनुभव है, जिसे 'मेरा राजस्थान' के प्रबुद्ध पाठको आनंद जरूर उठाना चाहिए।

आंकल वुड फॉसिल पार्क, जैसलमेर

'आंकल वुड' फॉसिल पार्क राजस्थान राज्य के 'जैसलमेर-बाडमेर' बस मार्ग

आंकल वुड फॉसिल पार्क

पर जैसलमेर से १७ किलोमीटर दूर स्थित है, आंकल ग्राम में राष्ट्रीय स्तर का वुड फॉसिल पार्क (जीवाश्म उद्यान) स्थित है, इसमें १८ करोड़ वर्ष पुराने पेड़-पौधों के जीवाश्म पाए जाते हैं,

'आंकल' जीवाश्म उद्यान राजस्थान का एक दर्शनीय स्थान है, यह उद्यान जैसलमेर-बाडमेर रोड पर जैसलमेर से लगभग १५ किलोमीटर दूर स्थित है तथा २१ हैक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है, यहाँ जुरैसिक काल के प्रारंभिक चरण में कोई १८० मिलियन यानी १८ करोड वर्ष पूर्व डायनासोरों के युग में समुद्र में बने जीवाश्म इधर-उधर छितरी अवस्था में देखे जा सकते हैं।

वन विभाग, राजस्थान इस पार्क की देखभाल करता है, वैसे तो यहाँ भूमि की सतह पर वृक्षों के तने, फल, बीज, घोंघों आदि के जीवाश्म बिखरे पडे हैं लेकिन यहाँ २५ वृक्षों की तने की लकड़ी के जीवाश्म विशेष रूप से दर्शनीय हैं, जिनमे १० तो स्पष्टता से नजर आते हैं, उनमे एक तो ७.० मी लंबा व १.५ मी चौडा है,

मरुभूमि राष्ट्रीय उद्यान

मरुभूमि राष्ट्रीय उद्यान राजस्थान राज्य के जैसलमेर शहर के थार मरुस्थल में स्थित है, यह थार रेगिस्तान और उसके समृद्ध वन्य पशुओं के पारिस्थितिक तंत्र का एक उदाहरण है। उद्यान का अधिकांश भाग **शेष पृष्ठ १७ पर...**

जैसलमेर का प्राचीनतम तीर्थ श्री लोद्रवा पार्श्वनाथदादा के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Subhash Bapna

Shri Jaisalmer Lodrawpur Parshwnath Jain Swetamber Trust

Managing Trustee

9414393044

C-41 Mandiyard Ramganj Mandi, Kota, Rajasthan, Bharat- 326519

पृष्ठ १६ से... नमक की झीलों की तलहटी और कंटीली झाड़ियों से पूर्ण है। मरुभूमि राष्ट्रीय उद्यान की अधिकतर भूमि बंजर है, डायनासोर के ६० लाख वर्ष पुराने जीवाश्म भी यहीं पाये गए थे, मरुभूमि राष्ट्रीय उद्यान में वन्यजीवों को देखने के लिये 'सुदश्री जंगल पोस्ट' सबसे अच्छी जगह है।

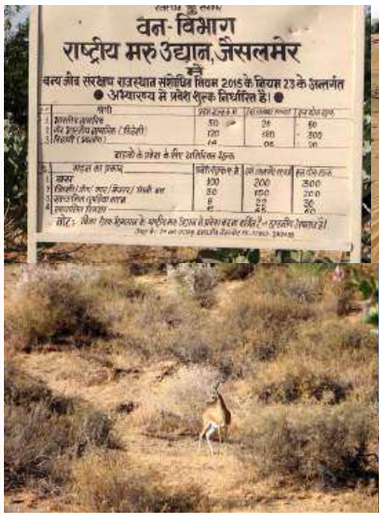

मरुभूमि राष्ट्रीय उद्यान

बड़ाबाग

बड़ाबाग

बड़ाबाग (शाब्दिक रूप से बड़ा बगीचा) भी कहा जाता है, जो भारत में राजस्थान राज्य में रामगढ़ के रास्ते पर जैसलमेर से लगभग ६ किलोमीटर उत्तर में एक उद्यान परिसर है। यह जैसलमेर के महाराजाओं के शाही समाधि स्थल या छत्रियों का एक सेट जैसा है, जिसकी शुरुआत जय सिंह द्वितीय के साथ १७४३ ईस्वी में की थी।

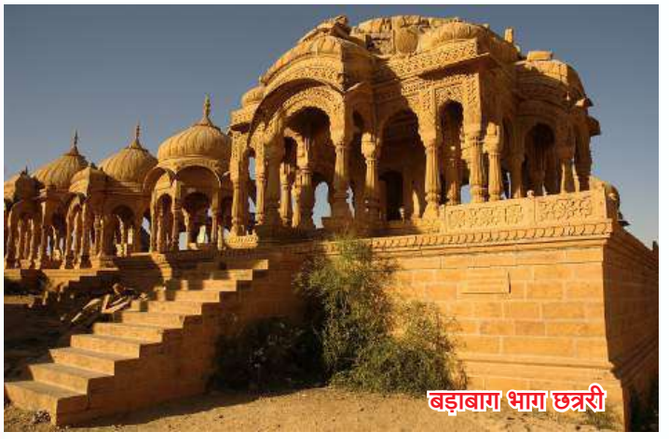
बड़ाबाग भाग छत्री

राज्य के संस्थापक और जैसलमेर राज्य के महाराजा, जैत सिंह द्वितीय (१४९७-१५३०), महारावल जैसल सिंह के वंशज, १६वीं शताब्दी में उनके शासनकाल के दौरान एक पानी की टंकी बनाने के लिए एक बांध बनाया था। इससे इस क्षेत्र में रेगिस्तान हरा हो गया। उनकी मृत्यु के बाद, उनके बेटे लूणकरण ने झील के बगल में एक सुंदर बगीचा और झील के बगल में एक पहाड़ी पर अपने पिता के लिए छतरी का निर्माण करवाया। बाद में, लूणकरण और अन्य भाटियों के लिए यहां कई और स्मारकों का निर्माण किया गया। अंतिम छतरी, महाराजा जवाहर सिंह'महाराज रघुनाथ सिंह और पृथ्वीराज सिंह की है, जो २०वीं सदी की तारीखों और भारतीय स्वतंत्रता के बाद पूरी नहीं हो पायी।

बड़ा बाग़ एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है। बड़ा बाग में प्रवेश पहाड़ी के नीचे से होता है। पहली पंक्ति में कुछ स्मारक हैं और भी कई स्मारक हैं, जो पहाड़ियों पर चढ़ने में सुलभ हैं। स्मारक विभिन्न आकारों के हैं और बलुआ पत्थर के नक्काशीदार हैं। शासकों, रानियों, राजकुमारों और अन्य शाही परिवार के सदस्यों के स्मारक बनाये गए हैं।ये छतरी बनाने का अधिकार शाही परिवार के देहवासी राजा के पोते का होता है।।जवाहर सिंह और गिरधर सिंह महाराज की छतरियां अभी पूर्ण नही हो पाई।। प्रत्येक शासक के स्मारक में एक संगमरमर का स्लैब है, जिसमें शासक के बारे में शिलालेख और घोड़े पर एक व्यक्ति की छवि है।स्थानीय भाषा मे इस घुड़सवार शिलालेख को जुंझार बोलते है जो देवतुल्य होता है।।

नथमल जी की हवेली: दीवान मोहता नथमल, जो कि जैसलमेर राज्य में प्रधान मंत्री थे, उनके रहने के लिए यह हवेली बनाई गई थी। महारावल बेरीसाल द्वारा निर्मित, दो भाईयों-हाथी और लूलू, **शेष पृष्ठ १८ पर...**

मरु टिलों, झीलों व हवेलियों के शहर जैसलमेर के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

ANUPAM SOODA
MOB- 94440 16741

zents™
Farmers

ANUPAM BROTHERS

NO. 16/2, V.P. COLONY SOUTH STREET, AYANAVARAM, CHENNAI, TAMILNADU- 600 023

पृष्ठ १७ से... जो कि बहुत ही जबरदस्त वास्तुकार थे, उन्होंने ही इस हवेली की वास्तुकला में सहयोग किया। मेन गेट पर दो पत्थर के हाथी

नथमल जी की हवेली

देखकर लगता है कि आपके स्वागत के लिए खड़े हैं। १९वीं शताब्दी में दो वास्तुकार भाईयों ने 'नथमल जी की हवेली' का निर्माण किया, उन्होंने दो तरफ से हवेली पर काम किया, जिसका परिणाम सम विभाजित संरचना के एक सुंदर रूप में सामने आया। मिनिएचर शैली के चित्रों और पीले बलुआ पत्थर पर नक्क़ाशीदार हाथी सजावट के लिए प्रयोग किये गये, हवेली का प्रारूप तथा नक्क़ाशी अन्य सभी हवेलियों से अलग हैं।

सालिम सिंह की हवेली: 'जैसलमेर' रेल्वे स्टेशन के नज़दीक यह हवेली मोर के पंखों जैसी गोलाई लिए छज्जों और मेहराबों से सजी है, तीन सौ साल पुरानी यह हवेली जैसलमेर के एक दुर्जेय प्रधानमंत्री सालिम सिंह का निवास था, यह हवेली १८वीं शताब्दी के आरंभ में बनाई गयी थी और इसका एक हिस्सा अब भी इसके वंशजों के अधीन है, ऊंचे मेहराबदार छत में खाँचे बांटकर मोर के आकार से अलंकरण तैयार किये गये, किंवदंती है कि वहाँ दो लकड़ी की मंजिलें और थीं जो इसे महाराजा

सालिम सिंह की हवेली

के महल के समान ऊँचाई प्रदान करती थीं, लेकिन उन्होंने इसको ध्वस्त

पटवों की हवेली

करने का आदेश दे दिया स्वर्ण आभूषणों जैसी इस हवेली को पर्यटक बड़े विस्मय से देखते हैं तथा इसकी ढेरों तस्वीरें लेते हैं।

पटवों की हवेली: इस हवेली के अन्दर पाँच हवेलियाँ हैं जो कि गुमान चंद पटवा ने अपने पाँच बेटों के लिए १८०५ ई. में बनवाई थी। इसे बनाने में ५० साल लग गए थे, जैसलमेर में सबसे बड़ी और सबसे ख़ूबसूरत नक्क़ाशीदार हवेली, यह पांच मंज़िला सरचना एक संकरी गली में गर्व से खड़ी है, यद्यपि हवेली अब अपनी उस भव्य महिमा को खो चुकी है, तथापि कुछ चित्रकारी और काँच का काम अभी भी अंदर की दीवारों पर देखा जा सकता है। पर्यटक इस हवेली को देखने के लिए पैदल या रिक्शे में ही आ सकते हैं, क्योंकि यह पतली गली के अन्दर है।

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाना चाहिए

WITH BEST COMPLIMENTS FROM:
Oriental Publishers & Distributors Pvt. Ltd.
(Nurturing Quality Education)
myschoolbookstore.in

AAKASH MAHESHWARI
CEO
SANJEEV SHARDA
DIRECTOR
Regd. Office & Sales Office :
17, Bhawani Dutta lane, Kolkata - 700073
orientalpublishers@ymail.com
9830052649

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें
Remove INDIA Name From The Constitution
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

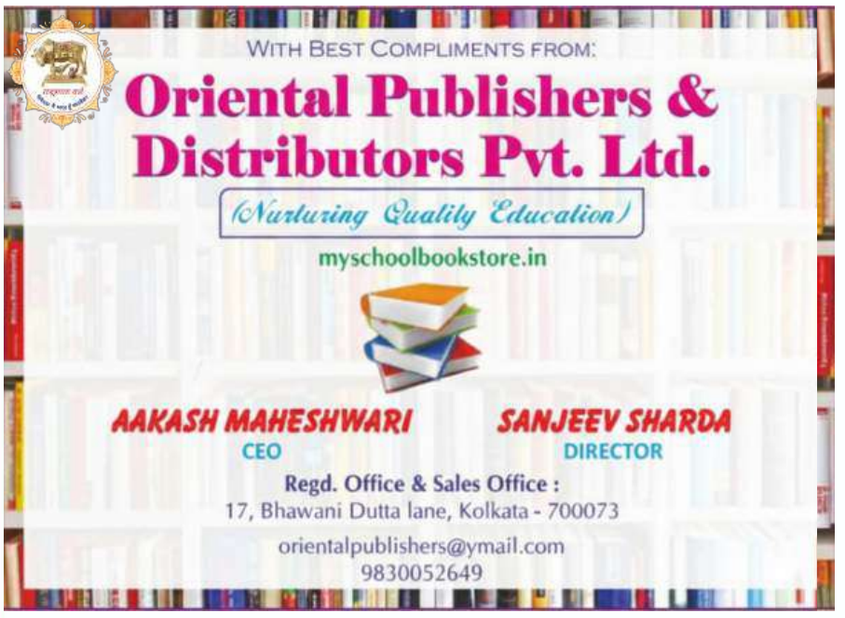

जैसलमेर के धार्मिक स्थल

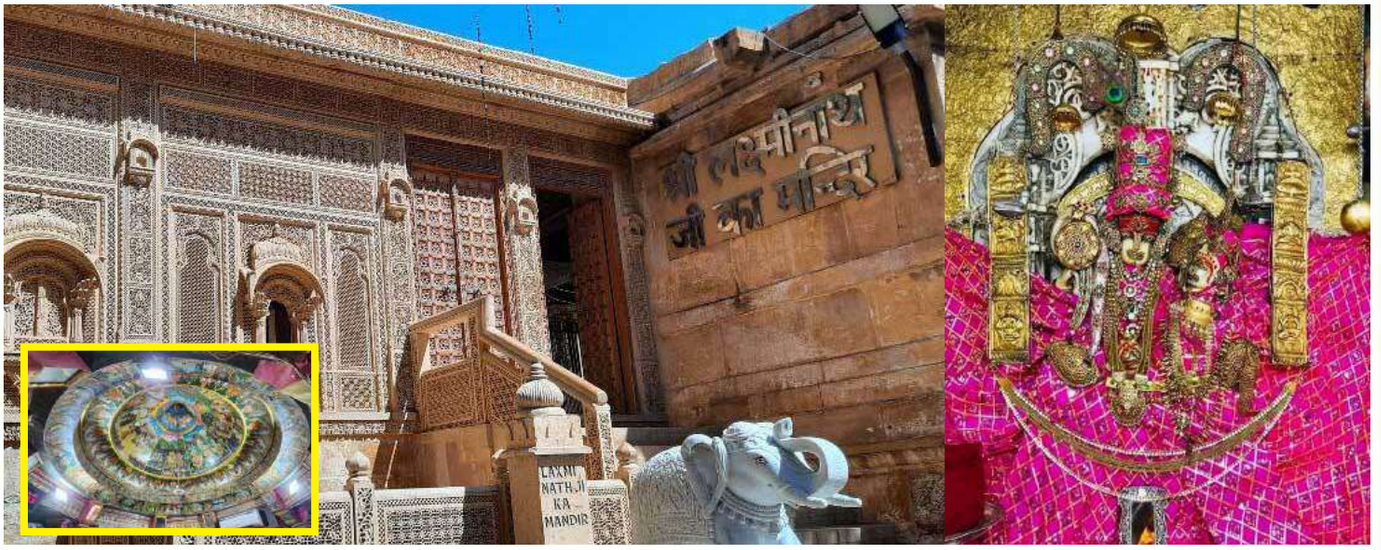

लक्ष्मीनाथ मंदिर जैसलमेर

लक्ष्मीनाथ मंदिर, जैसलमेर के ऐतिहासिक 'सोनार किला' के भीतर स्थित एक प्राचीन और महत्वपूर्ण हिंदू मंदिर है। यह मंदिर भगवान विष्णु और उनकी पत्नी देवी लक्ष्मी को समर्पित है, जो समृद्धि और संरक्षण की प्रतीक हैं। जैसलमेर के सबसे पुराने मंदिरों में से एक होने के कारण, यह स्थानीय लोगों और तीर्थयात्रियों के लिए आस्था का केंद्र है। अपनी साधारण लेकिन आकर्षक वास्तुकला और धार्मिक महत्व के साथ, मंदिर पर्यटकों को भी आकर्षित करता है। जैसलमेर किला, जो यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का हिस्सा है, इस मंदिर को एक अनूठा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक वातावरण प्रदान करता है। लक्ष्मीनाथ मंदिर, जैसलमेर एक प्राचीन और ऐतिहासिक हिंदू मंदिर है, जो भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को समर्पित है, इसका निर्माण १४९४ ई. में राव लूणकरण (भट्टी राजवंश) के शासनकाल में हुआ था, और यह जैसलमेर किले (यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल) के भीतर स्थित है। माना जाता है कि मंदिर की मूर्तियों को विद्वान ब्राह्मण सेन पाल शाकद्वीपी ने स्थापित किया था, और इसके खंभे लोद्रवा गाँव से लाए गए थे, जो उस समय भट्टी राजवंश की पुरानी राजधानी थी।

१४वीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के दौरान मंदिर का बड़ा हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया था। १५वीं शताब्दी में महारावल लक्ष्मण ने इसका जीर्णोद्धार कराया, जिसने मंदिर को उसका वर्तमान स्वरूप प्रदान किया था।

लक्ष्मीनाथ मंदिर जैसलमेर की वास्तुकला और संरचना

लक्ष्मीनाथ मंदिर अपने आप में बहुत सुंदर है और यद्यपि इसका बाहरी हिस्सा साधारण दिखता है, लेकिन अंदरूनी भाग में अद्भुत वास्तुकला और सुंदर नक्काशी है। मंदिर की वास्तुकला साधारण लेकिन सुंदर राजपूत शैली में है, जो पीले बलुआ पत्थर से निर्मित है। मंदिर के दरवाजों पर चाँदी की रूपरेखा और बारीक नक्काशी है, जो इसे एक शाही आकर्षण प्रदान करती है।

गर्भगृह में भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी की मूर्तियाँ स्थापित हैं, जो काले और सफेद संगमरमर से बनी हैं। गूढ़मंडप में अन्य देवताओं की पेंटिंग्स और छोटी मूर्तियाँ हैं। मंदिर की दीवारों और छत पर अन्य देवताओं की सुंदर चित्रकारी और नक्काशी है, जिसमें फूलों के पैटर्न, पौराणिक आकृतियाँ, और ज्यामितीय डिज़ाइन शामिल हैं।

मंदिर परिसर में एक छोटे गणेश मंदिर की छत पर भगवान विष्णु की सर्पों पर विराजमान मूर्ति है, जो वास्तुकला की एक अनूठी विशेषता है। मंदिर के कुछ हिस्सों पर जैन तीर्थंकरों की छोटी प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं, जो जैसलमेर में हिंदू-जैन सांस्कृतिक समन्वय का प्रतीक है।

जैन मंदिर: जैन कला का यह अथाह भंडार आज भारतीय संस्कृति की अमर धरोहर है, यहाँ के ज्ञान भंडार में संग्रहित कतिपय प्राचीन चित्रावशेषों का अत्यधिक महत्त्व है। दशवैकालिक सूत्र चूर्णि एवं ओधनिर्युक्ति (१०६० ई.) जिन्हें नागपाल के वंशज आनन्द ने पाहिल नामक व्यक्ति से प्रतिलिपि

कराया था, प्राचीनतम चित्रित ग्रंथ है, इन ग्रंथों में लक्ष्मी, इन्द्र, हाथी आदि की आकृतियाँ कलामय एवं दर्शनीय हैं।

तन्नोट माता मंदिर: भाटी राजपूत नरेश तणुराव ने शेष पृष्ठ २० पर...

पृष्ठ १९ से... वि.सं. ८२८ में तन्नोट माता का मंदिर बनवा कर, मूर्ति की स्थापना की थी, यहाँ आस पास के सभी गाँवों के लोग तथा विशेषकर, बीएसएफ

तन्नोट माता मंदिर

के जवान यहां पूर्ण श्रृद्धा के साथ पूजा अर्चना करते हैं। जैसलमेर से क़रीब १२० किलोमीटर दूर 'तन्नोट माता' मंदिर है। तन्नोट माता को देवी हिंगलाज़ का पुनर्जन्म माना जाता है। १९६५ में भारत पाकिस्तान युद्ध के दौरान, तन्नोट में हुए भारी हमले और गोलाबारी की कई कहानियाँ है, हालांकि मंदिर में गोले या बमों में से कोई भी विस्फोट नहीं हुआ, इससे लोगों की आस्था को बल मिला युद्ध के बाद से इस मंदिर का पुनर्निर्माण व प्रबंधन 'सीमा सुरक्षा बल' (बीएसएफ ट्रस्ट) द्वारा किया जाता है। तन्नोट माता का एक रूप 'हिंगलाज माता' का माना जाता है, जो कि वर्तमान में बलूचिस्तान में स्थापित है।

रामदेवरा मंदिर

रूणीचा बाबा रामदेव और रामसा पीर का पुण्य **शेष पृष्ठ २१ पर...**

जैसलमेर का किला

जैसलमेर का क़िला: यह क़िला एक वर्ल्ड हैरिटेज साइट है, थार मरूस्थल के 'त्रिकुटा पर्वत' पर खड़ा यह क़िला बहुत सी ऐतिहासिक लड़ाईयाँ देख चुका है, सूरज की रोशनी जब इस क़िले पर पड़ती है तो यह पीले बलुआ

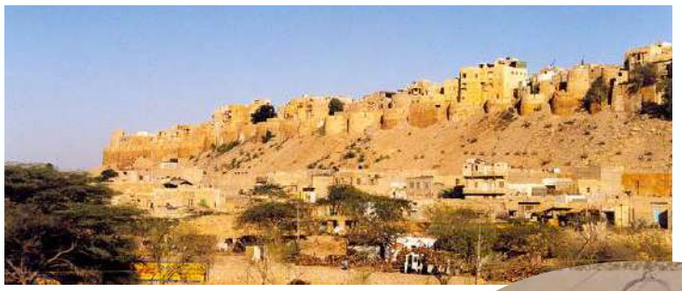

पत्थर से बना होने के कारण, सोने जैसा चमकता है, इसीलिए इसे 'सोनार क़िला' या 'गोल्डन फोर्ट' कहते हैं, अस्तांचल में जाता सूर्य भी अपने उजास से क़िले को अति सुंदर बना देता है। बेजोड़ शैली में निर्मित यह क़िला स्थानीय कारीगरों द्वारा शाही परिवार के लिए बनाया गया था। सोनार किला एक विश्व धरोहर स्थल है, महान फिल्मकार सत्यजीत रे की प्रसिद्ध फिल्म 'फेलुदा' में सोनार क़िला (द गोल्डन फोर्ट) का विशेष उल्लेख है, इसके अलावा भी यहाँ बहुत सी फिल्मों की शूटिंग की गई है, इस क़िले के सामने प्रतिवर्ष राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा फरवरी माह में डैजर्ट फैस्टिवल मनाया जाता है, इस उत्सव में ऊँट दौड़, ऊँट श्रृंगार, ऊँट सजावट, ऊँटनी का दूध निकालने की प्रतियोगिता, पगड़ी बाँधने की प्रतियोगिता तथा विभिन्न प्रकार के नृत्य व संगीत के कार्यक्रम होते हैं, इस उत्सव में हज़ारों की संख्या में देशी व विदेशी पर्यटक यहाँ आते हैं।

सोनार क़िला: दुर्ग निर्माण में सुंदरता के स्थान पर मज़बूती तथा सुरक्षा को ध्यान में रखा जाता था, परंतु यहां के दुर्ग मज़बूती के साथ-साथ सुंदरता को

भी ध्यान में रखकर बनाये गये। दुर्गों में एक ही मुख्य द्वार रखने के परंपरा रही है। दुर्ग मुख्यतः पत्थरों द्वारा निर्मित हैं, परंतु किशनगढ़, शाहगढ़ आदि दुर्ग इसके अपवाद हैं, ये दुर्ग पक्की ईंटों के बने हैं, प्रत्येक दुर्ग में चार या इससे अधिक बुर्ज बनाए जाते थे, ये दुर्ग को मज़बूती, सुंदरता व सामरिक महत्त्व प्रदान करते थे।

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

पृष्ठ २० से... स्थान है 'रामदेवरा मंदिर', इन्हें सभी धर्मों के लोग पूजते हैं। 'रामदेव जी' राजस्थान के एक लोक देवता हैं, इनकी छवि घोड़े पर सवार, एक राजा के समान दिखाई देती है, इन्हें हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक माना जाता है, वैसे भी राजस्थान के जनमानस में पाँच पीरों की प्रतिष्ठा है, उनमें से एक रामसा पीर का विशेष स्थान है। 'पोकरण' से १२ किलोमीटर की दूरी पर जोधपुर जैसलमेर मार्ग पर 'रामदेवरा मंदिर' स्थित है। अधिकांश लोग यह मानते हैं कि यह मंदिर भगवान राम को समर्पित है पर वास्तव में यह प्रसिद्ध संत बाबा रामदेव को समर्पित है, यह मंदिर बाबा रामदेव के अन्तिम विश्राम के स्थान का माना जाता है, सभी धर्मों के लोग यहां दर्शन के लिए आते हैं, यहां अगस्त और सितम्बर के बीच, 'रामदेवरा मेले' के नाम से एक बड़ा लोकप्रिय मेला आयोजित किया जाता है, बड़ी संख्या में भक्त यहां आकर रात पर भक्तिपूर्ण गीत गाते हैं।

भादरिया राय माता मंदिर

भादरिया राय माता मंदिर: भादरिया राय माता मंदिर जिसे आवड़ माता या स्वांगियां माता मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, जैसलमेर का एक प्रमुख धार्मिक और ऐतिहासिक स्थल है। यह मंदिर भादरिया गाँव, तहसील पोकरण, ज़िला जैसलमेर में स्थित है। यह मंदिर अपनी शांतिपूर्ण वातावरण, चमत्कारिक कथाओं, और नवरात्रि के भव्य उत्सवों के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर न केवल श्रद्धालुओं, बल्कि जैसलमेर की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत में रुचि रखने वाले पर्यटकों को भी आकर्षित करता है। भादरिया राय माता मंदिर की नींव सदियों पुरानी किंवदंतियों और लोक कथाओं में निहित है, जो देवी आवड़ और उनके सात बहनों के दिव्य स्वरूप से जुड़ी हैं।

वर्तमान मंदिर की स्थापना और प्रतिष्ठा का श्रेय जैसलमेर के महाराजा गज सिंह को जाता है। मंदिर की नींव और प्रतिष्ठा विक्रम संवत १८८८ (जो १८३१-१८३२ ईस्वी के अनुरूप है) में अश्विन माह की पूर्णिमा को हुई थी। महाराजा गज सिंह द्वारा यह निर्माण एक युद्ध में अप्रत्याशित विजय के बाद किया गया था, जिसे उन्होंने माता रानी के आशीर्वाद का परिणाम माना था। मान्यता है कि संवत् १८८५ में जैसलमेर व बीकानेर शासकों के बीच जब युद्ध हुआ, तब भादरियाराय माता ने कई चमत्कार भी दिखाए। जिसके बाद तत्कालीन महारावल गजसिंह ने भादरिया में मंदिर का निर्माण करवाया था। विक्रम संवत् १९६९ माघ शुक्ल चतुर्दशी को पूर्व महारावल शालीवान ने भादरिया माता को चांदी का सिंहासन भेंट किया था।

With Best Compliments:
Oswal
ALWAYS AHEAD IN QUALITY
FOXPRO
OS-PRO
अहिंसा सत्यमेव जयते
Oswal Electronic Co.
339, OLD LAJPAT RAI MARKET, CHANDNI CHOWK, DELHI, BHARAT- 110006
91-9891682867 / Tel.: 011-49076867
E-mail: oswalelectronic@gmail.com | www.oswalelectronic.com | www.foxpro.co.in

जैसलमेर की संस्कृति और खानपान

जैसलमेर की सुनहरी रेत में छिपा एक अनमोल स्वाद घोटुआ मिठाई क्या है? घोटुआ लड्डू रेसिपी, जैसलमेर का प्रसिद्ध भोजन कौन सा है?
जैसलमेर की प्रसिद्ध मिठाई, जैसलमेर की प्रसिद्ध मिठाई कौन सी है?
जैसलमेर की फेमस चीज़ क्या है?

जैसलमेर की घोटुआ मिठाई- जैसलमेर इस नाम को सुनते ही यहां के सामने विशाल रेगिस्तान, पीले पत्थरों से बना भव्य किला, और राजपूतों की शौर्य गाथाएं नाचने लगती हैं। यह शहर सिर्फ अपनी ऐतिहासिक इमारतों और सोनार किले के लिए ही नहीं जाना जाता, बल्कि अपनी अनूठी संस्कृति और जायकेदार व्यंजनों के लिए भी प्रसिद्ध है। और जब बात मीठे की आती है, तो जैसलमेर के व्यंजनों की रानी, एक ऐसी मिठाई है जिसका नाम शायद हर पर्यटक के होंठों पर न हो, लेकिन हर स्थानीय व्यक्ति के दिल में बसता है वह है घोटुआ।

'घोटुआ' सिर्फ एक मिठाई नहीं है यह जैसलमेर के इतिहास, यहां के मौसम और यहां के लोगों के प्रेम का सार है। आप को सोचना चाहिए एक ऐसी मिठाई जो आपको सीधे रियासत काल के रसोईघरों में ले जाए, जहां शुद्ध देसी घी की खुशबू और बेसन की सौंधी महक हवा में घुल-मिल जाती थी। इसका स्वाद आपकी जीभ पर उतरते ही एक कहानी सुनाता है रेगिस्तान की तपती गर्मी, ठंडी रातें, और मेहमानवाजी की अटूट परंपरा। यह वह जैसलमेर घूमने की जगहें हैं जहां आपको यह मिठाई ज़रूर चखनी चाहिए। यह मिठाई बेसन, दूध या मावा, चीनी और सबसे महत्वपूर्ण, शुद्ध देसी घी से बनाई जाती है। लेकिन इसे खास बनाने वाली चीज़ इसका घोटना है, जिससे इसका नाम घोटुआ पड़ा। यह प्रक्रिया ही इसकी जान है। यह वह धैर्य है जो सदियों से जैसलमेर की कारीगरी में झलकता है। इसकी बनावट न तो बिल्कुल बर्फी जैसी सख्त होती है और न ही हलवे जैसी गीली यह एक अनोखी दानेदार, लेकिन मलाईदार बनावट रखती है जो मुंह में रखते ही घुल जाती है। यह जैसलमेर की मिट्टी की तरह ही अनगढ़, पर बेहद आकर्षक है। यह एक ऐसा स्वाद है जो आपको याद दिलाएगा कि असली यात्रा सिर्फ नज़ारों की नहीं, बल्कि जायकों की भी होती है। सबसे अच्छे वेकेशन पैकेज

इतिहास के पन्नों से घोटुआ का शाही कनेक्शन और विरासत

हर महान व्यंजन के पीछे एक कहानी होती है, और घोटुआ का इतिहास तो सीधे जैसलमेर के राजघराने और यहां के व्यापारिक मार्गों से जुड़ा हुआ है। घोटुआ को जैसलमेर की रियासती रसोई का एक अभिन्न अंग माना जाता है। किले के अंदर, महाराजा और उनके मेहमानों के लिए तैयार होने वाले भव्य भोज, और उस भोज का समापन इसी स्वादिष्ट मिठाई से होता था। यह मिठाई मात्र स्वाद के लिए नहीं, बल्कि प्रतिष्ठा और मेहमानों के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक तरीका थी। यह टूली राजस्थान की पारंपरिक मिठाइयां में से एक है। जैसलमेर चूंकि सिल्क रूट के पास एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था, यहां दूर-दराज से व्यापारी और यात्री आते थे। इन मेहमानों का सत्कार करने के लिए ऐसी मिठाइयों की आवश्यकता थी जो न केवल स्वादिष्ट हों, बल्कि लंबे समय तक टिक सकें और यात्रा की थकान को दूर करने के लिए ऊर्जा से भरपूर हों। पाक-कला का धैर्य घोटुआ बनाने की पारंपरिक विधि की खासियत। घोटुआ के अनोखेपन का रहस्य इसके बनाने की प्रक्रिया में छिपा है, जो कि केवल सामग्री का मेलजोल नहीं, बल्कि एक कला है जिसमें समय, धैर्य और घोटने की कला का सही उपयोग होता है। इसे बनाना आसान लग सकता है, लेकिन इसका पारंपरिक स्वाद तभी आता है जब हर चीज को पूरी श्रद्धा के साथ निभाया जाए। कई लोग घर पर घोटुआ मिठाई रेसिपी तलाशते हैं, लेकिन पारंपरिक तरीके का मज़ा ही कुछ और है। सामग्री की पवित्रता से ही घोटुआ की शुरुआत होती है शुद्ध और सही सामग्री से। बेसन बारीक और ताज़ा होना चाहिए, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है शुद्ध देसी घी है। जैसलमेर में घी की गुणवत्ता बहुत ऊंची मानी जाती है, और यही घी घोटुआ को वह स्वर्णिम रंगत और ज़मीन से जुड़ी खुशबू देता है। भूनने की कला सबसे पहले बेसन को धीमी आँच पर, लगातार चलाते हुए, तब तक भुना जाता है जब तक कि वह सुनहरी-भूरा रंग न ले ले और उसकी भीनी-भीनी खुशबू पूरे घर में न फैल जाए। यह चरण बहुत नाज़ुक होता है अगर आंच तेज़ हुई, तो बेसन जल जाएगा और स्वाद कड़वा हो जाएगा। यह धीमी, स्थिर, और ध्यान केंद्रित करने वाली प्रक्रिया है ठीक वैसे ही जैसे जैसलमेर की जीवनशैली है। घोटना रहस्य का केंद्र बेसन भुन जाने के बाद, चाशनी या कभी-कभी गाढ़े मावा-दूध के मिक्स्चर को इसमें मिलाया जाता है।

स्वाद की दुनिया घोटुआ का अनोखा टेक्सचर और फ्लेवर।

अगर हम घोटुआ के स्वाद का वर्णन एक ट्रैवल राइटर की तरह करें, तो यह एक ऐसी यात्रा है जो आपकी स्वाद को रेगिस्तान की सुंदरता का अनुभव कराती है। यह सचमुच बेस्ट इंडियन डेसर्ट में से एक है जिसका नाम शायद कम लोगों ने सुना हो। घोटुआ को देखते ही सबसे पहले आपकी आंखें इसके गहरे सुनहरे, लगभग हल्के भूरे रंग पर ठहरती हैं, जो साफ़ तौर पर शुद्ध देसी घी की उपस्थिति को दर्शाता है। इसकी खुशबू में बेसन की भुनी हुई सौंधी सुगंध, घी की गर्माहट, और चीनी की मीठी मिठास **शेष पृष्ठ २३ पर...**

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

पृष्ठ २२ से... का एक संतुलित मिक्स्चर होता है। यह खुशबू इतनी मजेदार और आरामदायक होती है कि आपको तुरंत घर जैसा महसूस कराती है।सबसे अच्छे वेकेशन पैकेज

बनावट का जादू– यह वह जगह है जहां घोटुआ अपना जादू बिखेरता है। इसे मुंह में रखते ही, आपको बेसन के महीन दानों का हल्का-सा एहसास होता है, लेकिन अगले ही पल यह पूरी तरह से घुल जाती है। यह न तो बर्फी की तरह चबाने लायक होती है और न ही लिक्विड के समान, बल्कि यह एक अनोखी मेल्ट-इन-माउथ मलाईदार बनावट प्रदान करती है। यह दानेदार और मुलायम का एक आदर्श समागम है। घोटने की कला का परिणाम यहां स्पष्ट रूप से महसूस होता है।

स्वाद का संतुलन कैसे बनाएं- घोटुआ का स्वाद ज़बरदस्त मीठा नहीं होता यह एक अनोखी मिठास लिए होता है। इसमें घी का एक गहरा, स्वाद होता है जो बेसन के स्वाद के साथ पूरी तरह से घुल जाता है। कुछ पारंपरिक घोटुआ रेसिपी में इलायची या केसर का इस्तेमाल किया जाता है, जो इसे एक ताज़गी भरी खुशबू देता है। यह मिठाई पेट भरने वाली, ऊर्जा से भरपूर, लेकिन कभी भी भारी नहीं लगती। यह रेगिस्तान की धूप के बाद मिलने वाली ठंडी छांव के समान है संतुष्टि से भरपूर और आनंददायक। यह वह स्वाद है जो आपको जैसलमेर की मिट्टी और संस्कृति से जोड़ता है। जैसलमेर की संस्कृति में, भोजन केवल पेट भरने का माध्यम नहीं है यह एक सामाजिक और भावनात्मक अनुष्ठान है। घोटुआ, इस अनुष्ठान का एक चमकता सितारा है। इसका महत्व केवल इसके स्वाद तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शहर के जीवन के ताने-बाने में गहराई से बुना हुआ है। जैसलमेर पर्यटन का अनुभव यहां के व्यंजनों के बिना अधूरा है।

शुभ अवसरों का प्रतीक घोटुआ- कोई भी बड़ा त्योहार, चाहे वह दिवाली हो, होली हो, या गणगौर, घोटुआ के बिना अधूरा है। यह शुभता, समृद्धि, और परिवार के प्रति प्रेम का प्रतीक है। जब किसी परिवार में कोई खुशी का अवसर होता है, जैसे बच्चे का जन्म या विवाह, तो घोटुआ को विशेष रूप से बनाया जाता है और पूरे समुदाय में बांटा जाता है। यह खुशी बांटने का एक मीठा माध्यम है।

मेहमाननवाजी की पहचान है घोटुआ- राजस्थान अपनी अद्भुत मेहमाननवाजी के लिए प्रसिद्ध है, और जैसलमेर इसमें अग्रणी है। जब कोई मेहमान घर आता है, तो उसे घोटुआ पेश करना केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि अतिथि के प्रति सम्मान व्यक्त करने का तरीका है। यह दर्शाता है कि आपने मेहमान के लिए सबसे शुद्ध और कीमती सामग्री का उपयोग करके विशेष रूप से कुछ तैयार किया है। यह पधारो म्हारे देस की भावना को साकार करता है।

ऊर्जा और स्वास्थ्य का स्रोत घोटुआ – रेगिस्तानी जलवायु और जीवनशैली कठिन हो सकती है। घोटुआ, जिसमें उच्च मात्रा में घी और बेसन होता है, तुरंत ऊर्जा प्रदान करता है और शरीर को गर्म रखने में मदद करता है। ऐतिहासिक रूप से, इसे सैनिकों और लंबी यात्रा करने वाले व्यापारियों के लिए एक आवश्यक खाद्य पदार्थ माना जाता था। इसलिए, घोटुआ स्वास्थ्य और पोषण के पारंपरिक ज्ञान को भी दर्शाता है। यह जैसलमेर के लोगों के लचीलेपन और गर्मजोशी का एक मीठा उदाहरण है।

कहां चखें और कैसे पहचानें असली घोटुआ? यदि आप जैसलमेर की यात्रा पर हैं, तो यह प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण है इस स्वर्णिम मिठाई को कहां पाया जाए और कैसे सुनिश्चित किया जाए कि आप असली, पारंपरिक 'घोटुआ' चख रहे हैं? यह जानना ज़रूरी है कि 'जैसलमेर' में खाने के लिए सबसे अच्छी जगहें कौन सी हैं।

किले के पास की पुरानी दुकानें 'जैसलमेर' के किले के आसपास की पुरानी गलियों में कई पारंपरिक मिठाई की दुकानें हैं जो पीढ़ियों से घोटुआ बना रही हैं, ये दुकानें अक्सर अपने पारंपरिक तरीके और शुद्धता के लिए जानी जाती हैं। स्थानीय बाज़ार सदर बाज़ार या किलों के मुख्य द्वार के पास के बाज़ारों में छोटी-छोटी दुकानें या ठेले मिल सकते हैं जो इसे ताज़ा बनाते हैं। यहां आपको वह प्रामाणिक स्वाद मिलेगा जो बड़े, आधुनिक आउटलेट में शायद न मिले।

रंग और चमक– असली घोटुआ का रंग गहरा सुनहरा या हल्का भूरा होता है। यह शुद्ध देसी घी के कारण एक प्राकृतिक चमक लिए होता है। अगर रंग बहुत हल्का पीला है, तो हो सकता है कि उसमें घी की मात्रा कम हो या उसमें कृत्रिम रंग मिलाया गया हो।

टेक्सचर- सबसे बड़ा संकेत है इसकी बनावट। यह दानेदार दिखना चाहिए, लेकिन छूने पर मुलायम और तेल छोड़ने वाला महसूस होना चाहिए। अगर यह बर्फी की तरह बहुत कठोर या चिपचिपा है, तो यह पारंपरिक घोटुआ नहीं हो सकता। **पृष्ठ २४ का शेष...**

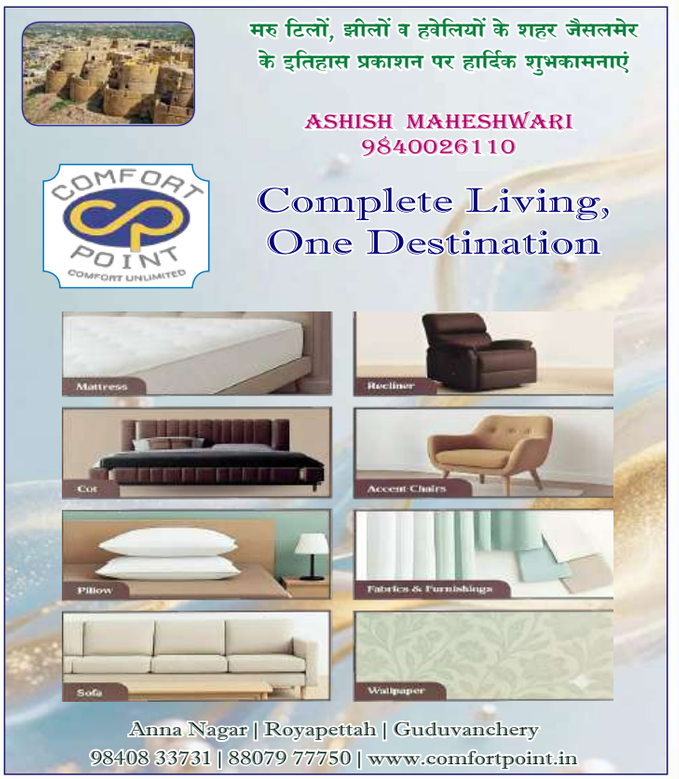

पृष्ठ २३ से... **खुशबू–** सबसे पहले इसे सूंघिए। शुद्ध देसी घी और भुने हुए बेसन की गहरी, मादक खुशबू आनी चाहिए। किसी भी कृत्रिम सुगंध की महक नहीं आनी चाहिए। ताज़गी बेहतरीन स्वाद के लिए, हमेशा ताज़ा बना हुआ घोटुआ ही खरीदें। यह अक्सर कमरे के तापमान पर परोसा जाता है, गर्म नहीं। जैसलमेर में घोटुआ चखना केवल एक व्यंजन का स्वाद लेना नहीं है, बल्कि उस जगह की आत्मा से जुड़ना है।

पर्यटन का अनुभव जैसलमेर टूर पैकेज

यात्रा हमें नई कहानियां, नए नज़ारे और सबसे महत्वपूर्ण, नए स्वाद देती है। घोटुआ मिठाई जैसलमेर के लिए केवल एक स्थानीय व्यंजन नहीं है यह एक ऐसा पर्यटक आकर्षण है जो शहर की पहचान को मीठा बनाता है। यह जैसलमेर के पर्यटन अनुभव का एक अनिवार्य हिस्सा है, ठीक वैसे ही जैसे सोनार किला और सैम सैंड ड्यून्स हैं। जो यात्री जैसलमेर टूर पैकेज लेते हैं, उन्हें इस मिठाई के बारे में ज़रूर जानना चाहिए। आपने दिन भर किले की गलियों में घूमकर इतिहास को महसूस किया, शाम को रेगिस्तान में ऊंट की सवारी का रोमांच लिया, और रात को तारों से भरे आकाश के नीचे लोक संगीत सुना। अब इस अनुभव को पूरा करने के लिए क्या चाहिए? एक कटोरी में, देसी घी से लबालब, दानेदार घोटुआ! यह मिठाई आपके यात्रा के अनुभव को एक मीठी और संतुष्टि दायक समाप्ति देती है। घोटुआ स्थानीय कारीगरी का एक प्रमाण है। जब आप घोटुआ खरीदते हैं, तो आप केवल एक मिठाई नहीं खरीद रहे होते हैं बल्कि आप एक पुरानी परंपरा को जीवित रखने वाले स्थानीय कारीगरों और छोटे व्यवसायों का समर्थन कर रहे होते हैं। यह एक जिम्मेदारी पूर्ण पर्यटन का उदाहरण है संस्कृति को संरक्षित करने में योगदान देना है। जैसलमेर की यात्रा अधूरी है अगर आप घोटुआ के स्वाद को महसूस नहीं करते। यह शहर का मीठा हृदय है।

गो पालीं तब ही बने, कान्हा जी गोपाल।
दूध-दही से वे करें, सब को मालामाल।।
सदियों का इतिहास हमारा, गौ-संवर्धन अपनाना है

NIRMAL BATHWAL
Director
Mobile: 98202 14160

BASONS INVESTMENTS PVT. LTD.

B/702, Citiscape CHS. Ltd., A. K. Road, Andheri (E), Mumbai - 59.
Email: basonsnirmal@yahoo.in
& basonsnirmal@gmail.com

गौ संरक्षण के लिए समर्पित जैसलमेर की भादरिया गौशाला

गौशाला में ४० हजार देशी गोवंश है जिसको रखने व चराने के लिए मंदिर परिसर के नाम एक लाख से ज्यादा बीघा जमीन आरक्षित हैं जहां मंदिर ट्रस्ट द्वारा गायों को बचाने की अपील की जाती है। जिसमें से ३८००० सांड (मेल) गोवंश है इन गौवंश को चराने व रखने के लिए मंदिर के नाम एक लाख बीघा से ज्यादा जमीन आवंटित है जिसमें यह गोवंश वहीं रहते हैं। ऐसे में मंदिर ट्रस्ट की ओर से इसको भारत का सबसे बड़ा ३८ हजार सांडों का अभ्यारण होने का भी दावा किया है।

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

जैसलमेर का भूमिगत पुस्तकालय

मंदिर में हर साल असंख्य श्रद्धालु आते हैं. उनमें से बहुत से लोगों की दिलचस्पी इस पुस्तकालय को देखने में भी रहती है

गौशाला में गिर, थारपारकर, राठी और नागोरी जैसी विभिन्न प्रजातियों के लगभग ४४,००० गाय और बैल हैं

मंदिर के बाहर चहलपहल से भरा एक छोटा सा बाज़ार है जहाँ पूजा-पाठ की सामग्रियां, खिलौने और खाने-पीने की चीजें बिकती हैं

मीडिया और पत्रकारिता से संबंधित किताबें भी यहाँ संग्रहित हैं

मंदिर के बाहर चहलपहल से भरा एक छोटा सा बाज़ार है जहाँ पूजा-पाठ की सामग्रियां, खिलौने और खाने-पीने की चीजें बिकती हैं

स्तकालय का रख-रखाव करने वाली टीम में काम करने वाले अशोक कुमार देवपाल

पश्चिमी राजस्थान के एक पवित्र भूमिगत खोह में बना भादरिया पुस्तकालय मे दो लाख से भी अधिक पुस्तकों के संग्रह की दृष्टि से एक अनोखी जगह है।

श्री भादरिया माता जी मंदिर के प्रवेशद्वार पर गाते हुए संगीतकारों की आवाजें हमारे सीढ़ियों से नीचे उतरने के साथ धीरे-धीरे कम होती जाती हैं. नीचे हम लगभग २०० साल पुरानी एक कन्दरा में पहुँचते हैं. फिर अचानक सभी आवाजें पूरी तरह सुनाई देनी बंद हो जाती हैं – हम ज़मीन के करीब २० फुट नीचे पहुँच चुके हैं. हमारे सामने कोई १५,००० वर्गफुट क्षेत्र में फैला एक पुस्तकालय का दृश्य खुला हुआ है जो अपनी बनावट में कमोबेश किसी भूलभुलैया की तरह है. पुस्तकालय में थोड़े अंतरालों पर ५६२ आलमारियों की कतारें बनी हैं और उनमें २ लाख से अधिक पुस्तकें रखीं हैं. चमड़े के जिल्द चढ़े ग्रन्थ, छाल पर लिखी हुई पुरानी पाण्डुलिपियां, हिंदूवाद, इस्लाम, इसाई धर्म और दूसरे संप्रदायों से लेकर विधि और औषधि विज्ञान जैसे विषयों के पेपरबैक और पुराने संस्करण, दर्शन विज्ञान, भूगोल, इतिहास और न जाने कितने दूसरे विषयों पर लिखी गई असंख्य किताबें यहाँ देखी जा सकती हैं.

कथा-साहित्य से संबंधित किताबों की दीर्घाएँ भी उतनी ही समृद्ध हैं. उन में कालजयी रचनाओं से लेकर हाल-फ़िलहाल के वर्षों में लिखे गये उपन्यास भी शामिल हैं. पुस्तकालय की अधिकांश किताबें हिंदी भाषा में हैं लेकिन अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में लिखी किताबों की भी कोई कमी नहीं.

इस पुस्तकालय की स्थापना के पीछे हरवंश सिंह निर्मल का विचार था जो पंजाब के एक धार्मिक विद्वान थे. उनके बारे में कहा जाता था कि उन्होंने अपने जीवन के २५ वर्ष इसी मन्दिर के परिसर में एक गुफा में बिताये थे, और मन्दिर के नीचे इस पुस्तकालय को बनाने की बात सोची थी. हालाँकि निर्मल २०१० में चल बसे लेकिन उससे बहुत पहले उन्होंने शिक्षा और पशुकल्याण के उद्देश्य से पर्याप्त राशि का संग्रह कर काम शुरू कर दिया था.

'वे पक्के मानवतावादी थे. सभी धर्मों का एक ही बुनियादी संदेश है: मनुष्य की त्वचा और बालों के रंग भले ही भिन्न हो सकते हैं, लेकिन भीतर से हम सभी एक जैसे ही हैं,' श्री जगदंबा सेवा समिति नाम के न्यास के सचिव जुगल किशोर कहते हैं. मंदिर और पुस्तकालय के संचालन का उत्तरदायित्व इसी न्यास की है. यह न्यास एक गौशाला का प्रबंधन भी करता है जिनमें लगभग ४०,००० गायें हैं.

पुस्तकालय के निर्माण का काम साल १९८३ में शुरू हुआ और १९९८ में यह बनकर तैयार हो गया. उसके बाद पुस्तकालय के लिए किताबें संग्रहित करने का काम आरंभ हुआ. 'वे डनिर्मल.इस पुस्तकालय को ज्ञान के एक केंद्र और एक विश्वविद्यालय के रूप में विकसित करना चाहते थे,' किशोर बताते हैं, 'महाराजा जी चाहते थे कि लोग दूरदराज़ से यहाँ आएं, और जो ज्ञान कहीं उपलब्ध नहीं हो, वह उन्हें यहाँ सुलभता से प्राप्त हो सके.'

पुस्तकालय के प्रशासक बताते हैं कि इसकी स्थापना के लिए इस भूमिगत स्थान का चयन इसलिए किया गया ताकि धूल और नुकसान से यथासंभव बचा जा सके पोखरण स्थित भारतीय सेना का फायरिंग रेंज यहाँ से १० की दूरी पर है, और राजस्थान के हरे घास के मैदानों में जब तेज़ हवाएँ चलती हैं तब कहीं भी धूल से बचाव कठिन है।

स्वर्गीय हरवंश सिंह निर्मल एक धार्मिक विद्वान थे जिन्होंने इस पुस्तकालय की स्थापना की

जुगल किशोर जो श्री जगदंबा सेवा समिति नाम के न्यास के सचिव हैं। यह न्यास मंदिर के अलावे इस पुस्तकालय और एक गौशाला का संचालन करता है

पुस्तकालय का रख-रखाव करने वाली टीम में काम हैं, करनेवाले बताते हैं कि पुस्तकालय को छह एग्जॉस्ट पंखों की मदद से सूखा रखा जाता है. हवा को शुष्क रखने के लिए नियमित रूप से कपूर जलाए जाते हैं. फंफूद से बचाव के लिए, 'हम किताबों को समय-समय पर हवा दिखाते रहते हैं. हम सात-आठ लोग दो से भी अधिक महीनों तक यही काम करते हैं।

REQUIRED

ACCOUNTANT WITH

3 TO 5 YEARS EXPERIENCE

FOR A CA FIRM AT DADAR EAST

Mobile No.: 9982413267 | Email: ca.kabra.associates@gmail.com

अग्रवाल सेवा समिति, भाईंदर का ४३वां वार्षिकोत्सव संपन्न

मुंबई: अग्रवाल सेवा समिति, भाईंदर ने ४३वां वार्षिकोत्सव उत्साह के साथ मनाया, कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन एवं महाराजा अग्रसेन जी की आरती से हुई। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित राजस्थान सरकार के मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने अग्रवाल समाज के अग्रसमाजहित, शिक्षा, सेवा व सहयोगपूर्ण कार्यों मों की सराहना करते हुए कहा कि समाज जहां भी रहता है, वहां सेवा कार्यों में हमेशा अग्रणी रहा है, उन्होंने जुगल नायक निर्देशित 'घर के भीतर सरहदें' नाटक की भी प्रशंसा की और आज का ज्वलंत और संवेदनशील विषय बताया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों के रूप में विधायक नरेंद्र मेहता, रामप्रकाश बुबना, समारोह अध्यक्ष भवानीशंकर गाड़ोदिया, शुभम गुप्ता, शंकर मित्तल, पुरुषोत्तम केजड़ीवाल, श्याम सुंदर अग्रवाल, सीए विष्णु अग्रवाल, नारायण पोद्दार, राजकुमार केडिया और सन्नी अग्रवाल उपस्थित थे।

श्री गुप्ता ने जीवन के संघर्ष की कहानी साझा की और युवाओं को प्रेरित किया, इस दौरान वरिष्ठ नागरिकों और कम्युनिटी कनेक्ट प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में 'अग्रपंकज' स्मारिका का विमोचन हुआ। मनपा पुस्तकालय के लिए १०० किताबें दी गई। कार्यक्रम संचालन आरजे विधि जैन ने किया, कार्यक्रम में अध्यक्ष डॉ. नरेंद्र गुप्ता, सीए मनोज खेमका, गिरीश अग्रवाल, राजेंद्र मित्तल, भीकमचंद अग्रवाल, भारत अग्रवाल की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

बख्तर कीजे लोहे का, पग कीजे पाषाण !
घोड़ा कीजे काठ का, तब देखो जैसान

Rahul Sanwal
99401 34750

Money Matters

AC-70/1, 1st Street,
Anna Nagar, Chennai, Tamil Nadu, Bharat- 600040

उद्योगपति मुरली बालाण ने बेटे की शादी में प्रस्तुत किया अनुपम उदाहरण

मायरे में लिया एक रुपया, सोने चाँदी के लेन-देन को किया बंद, ढुकाव के दिन में फेरे गोधूली वेला में नवविवाहित बहू को दादा ने हुंडई क्रेटा कार उपहार स्वरूप भेटं किया

मुंबई-लक्ष्मणगढ़ जाने माने उद्योगपति भामाशाह समाजसेवी मुरली बालाण ने अपने सुपुत्र की शादी समारोह में सराहनीय पहल प्रस्तुत करते हुए दहेज प्रथा के खिलाफ अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। मुम्बई प्रवासी चूरू निवासी उद्योगपति बालाण के सुपुत्र विशाल की शादी सिरसा हाल सूरत निवासी जीतसिंह गहलोत की सुपुत्री दिव्या के साथ चूरू में आयोजित की गई थी।

शादी में जहां दहेज व बाटका नहीं लिया गया, जबकि नवविवाहिता को ससुरालपक्ष की ओर से दुल्हे के दादाजी शंकरलाल बालाण ने हुंडई क्रेटा कार उपहार में भेंट की तथा शादी में आने वाले मेहमानों से किसी तरह का गिफ्ट कवर नहीं लिया गया जबकि शादी में आए पारिवारिक सदस्यों को लेपटॉप बैग व मिठाई भेंट स्वरूप दी गई साथ ही आशीर्वाद समारोह में पधारे मेहमानों को फोटो फ्रेम के साथ इंस्टेंट फोटो प्रिंट उपहार भेंट किए गए। शादी समारोह के अवसर पर आयोजित मायरे में भी जहां उद्योगपति बालाण ने एक रुपया लिया, वहीं सोने चांदी के लेन-देन को बंद किया तथा

ढुकाव व तोरण सूर्य को साक्षी मान कर दिन में व पाणिग्रहण संस्कार गोधूलिबेला में सम्पन्न किया। शादी में मुंबई, सिलवासा, भरूच, अहमदाबाद, दिल्ली, सिरसा, हिसार, जयपुर, पुणे, सूरत व प्रदेश के कोने-कोने से आशीर्वाद देने पहुँचे, इस अवसर पर पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़, राजस्थान सरकार में कैबिनेट मंत्री अविनाश गहलोत, भाजपा हरियाणा प्रभारी राजस्थान भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सतीश पुनियां, लोकसभा प्रत्याशी व पदमश्री देवेंद्र झाझड़िया, चूरू विधायक हरलाल सहारण, यूपी सम्भल से पूर्व विधायक परमेश्वर लाल सैनी, प्रदेश प्रवक्ता अशोक सैनी, प्रदेश मंत्री वासुदेव चावला, फुले ब्रिगेड संयोजक सी पी. सैनी, मुंबई निवासी सुरेश सैनी, महात्मा ज्योतिबा फुले छात्रावास लक्ष्मनगढ के पदाधिकारी, शेखावाटी अंचल के मुख्य शहरों के समाज अध्यक्ष व पदाधिकारी, माली डीडवाना महासभा, माली समाज देवीदास बगीची चूरू के सभी पदाधिकारी, जन प्रतिनिधियों सहित शादी समारोह में शिरकत कर नव दंपति को सफल दांपत्य का आर्शीवाद देकर उज्जवल जीवन की मंगलकामना की। शादी समारोह में पधारे अतिथियों व मेहमानों का दूल्हे के चाचा व चूरू भाजपा युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष एम.गोपाल बालाण ने आभार व्यक्त किया।

सरायकेला में राणी सती दादी के मंदिर के दर्शनार्थ पधारें -संजय सेक्सरीया अध्यक्ष

सरायकेला नगर में पहली बार भव्य तरीके से राणी सती दादी मंदिर का उद्घाटन २/२/२०२६ को होगा, इसको लेकर तैयारियां आरंभ हो गई हैं। सरायकेला लहरिटोला के पास मंदिर बनकर तैयार है, जनसहयोग से दादी राणी सती मंदिर बना है,लाखों रुपए से मंदिर का निर्माण हुआ है, मंदिर का निर्माण पिछले ५ सालों से हो रहा था, जिसका अंतिम रूप दे दिया गया है। मालूम हो कि कि राणी सती दादी मंदिर बनने से यहां के भक्तों को अन्य दरबार में नहीं जाना होगा। अध्यक्ष संजय सेकसरिया, सुमित चौधरी, भास्कर रामूका, नितिन अग्रवाल, आनंद अग्रवाल उपस्थित थे। जय भारत!

संजय सेकसरीया

हार्दिक शुभकामनाओं सहितः
श्रीचंद, सुशीलकुमार, सुरेंद्र-ऋतु, विपुल-सुचिता जैन चोरड़िया
टमकोर(राजस्थान) - कोलकाता - रायपुर(छत्तीसगढ़)

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी सम्मेलन फाउंडेशन की पहल

सीताराम रुंगटा मारवाड़ी सम्मेलन भवन के निर्माण कार्य का हुआ शुभारंभ

कोलकाता: अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी सम्मेलन फाउंडेशन के द्वारा सीताराम रुंगटा मारवाड़ी सम्मेलन भवन के निर्माण कार्य का शुभारंभ विशेष पूजा-अर्चना के साथ सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भवन निर्माण उपसमिति के चेयरमैन संतोष सराफ एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन कुमार गोयनका की देखरेख में संपन्न हुआ। २५ए, अम्हर्स स्ट्रीट, कोलकाता स्थित प्रस्तावित भवन स्थल पर यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। निर्माणाधीन भवन चार मंजिला होगा और इसका निर्माण कार्य आगामी दो वर्षों में पूर्ण होने की संभावना है। यह भवन मुख्य रूप से उन समाज के विद्यार्थियों के लिए समर्पित है जो पढ़ाई हेतु कोलकाता आते हैं। भवन में छात्रावास, अध्ययन-सुविधाएं एवं आवासीय व्यवस्था उपलब्ध कराई जाएगी, जिससे विद्यार्थियों को सुरक्षित, संस्कारयुक्त एवं प्रेरणादायी वातावरण प्राप्त हो सके। भवन का क्षेत्रफल १५,००० वर्ग फीट है तथा इसे ४० विद्यार्थियों के आवास की क्षमता के साथ विकसित किया जा रहा है, प्रथम तल पर एक सांस्कृतिक कक्ष, सामाजिक गतिविधियों हेतु बहुउद्देश्यीय हॉल तथा अन्य प्रांतों से आने वाले सदस्यों के अतिथि-निवास कक्ष बनाए जा रहे हैं, भवन के निर्माण में एस.आर. रुंगटा ग्रुप का अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी योगदान है, उनके सहयोग, समर्पण और मार्गदर्शन से इस परियोजना को प्रारंभिक स्वरूप प्राप्त हुआ है, जिसके लिए सम्मेलन उनकी हार्दिक सराहना करता है। निर्माण कार्य की संपूर्ण जिम्मेदारी अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की भवन निर्माण उपसमिति के अधीन होगी, उपसमिति के चेयरमैन, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष सराफ एवं संयोजक, वर्तमान संयुक्तमंत्री पवन कुमार जालान दोनों इस परियोजना को समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण रूप से पूर्ण कराने हेतु निरंतर प्रयासरत रहेंगे। सीताराम रुंगटा मारवाड़ी सम्मेलन भवन समाज की शिक्षा, सेवा और संस्कार आधारित मूल्यों को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, यह भवन आने वाली पीढ़ियों के लिए अवसरों का द्वार बनेगा और सामाजिक उत्थान में मील का पत्थर सिद्ध होगा। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण सीताराम शर्मा, पद्मश्री प्रह्लाद राय अगरवाला, संतोष सराफ, गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष गिरधारी लाल गोयनका, राष्ट्रीय महामंत्री केदारनाथ गुप्ता, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्रीगण, रतन शाह, संजय हरलालका, कैलाशपति तोदी, राष्ट्रीय संयुक्तमंत्री पवन कुमार बंसल, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अनिल कुमार मलावत, निवर्तमान राष्ट्रीय संयुक्तमंत्री संजय गोयनका, पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्षगण गोपाल अग्रवाल, दामोदर प्रसाद बिदावतका, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष नंदकिशोर अग्रवाल, प्रांतीय महामंत्री पंकज भालोटिया, जगदीशचंद्र एन. मुंधड़ा, सुनील मणिरामका, अमित मुंधड़ा, ओम प्रकाश रुइया आदि सदस्यगण उपस्थित थे।

सुनहरा रेतीला परिदृश्य और नक्काशीदार हवेलियाँ से
सुसज्जित जैसलमेर के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Manoj Bisani
Mob: 93747 22809

NF
Neha TEX FAB
MGF. OF: EXCLUSIVE FANCY DYED FABRICS
SHOP NO.: 2070-2073, VANKAR TEXTILE MARKET (VTM),
RING ROAD, SURAT, BHARAT -395002

गो पालीं तब ही बने, कान्हा जी गोपाल। दूध-दही से वे करें, सब को मालामाल।।
सदियों का इतिहास हमारा, गौ-संवर्धन अपनाना है

Sanjay Seksaria
Mob-9110088741 / 9709704316
Abhishek Seksaria
Mob.-9709696668
ASHOK VASTRALAYA
Deals in all type of Textiles, Readymade garments and school unifroms
Ward No.-7, Lahri Tola, Seraikella-Kharsawan,
Jharkhand, Bharat -833219
Email- ashokvastralaya65@gmail.com

करूणा की भावना को दर्शाता श्री माहेश्वरी अस्पताल

जैसलमेर: भारत की पश्चिमी सीमा पर थार रेगिस्तान के मध्य में बसे जैसलमेर जिले का जैसलमेर शहर, देश का सबसे बड़ा जिला होने का गौरव प्राप्त करता है, जो केरल राज्य के विस्तार से भी बड़ा है, फिर भी इसका अतीत कठिनाइयों से भरा रहा है, जहाँ संसाधनों और बुनियादी सुविधाओं की कमी के कारण निवासियों को संघर्ष करना पड़ता था चिकित्सा सेवाओं का विशेष रूप से अभाव था, जिससे स्थानीय लोगों को नियमित सर्जरी के लिए भी पूरी तरह सरकारी सेवाओं पर निर्भर रहना पड़ता था। जैसलमेर शहर और उसके आसपास कई गाँव हैं जो सभी चिकित्सा सुविधाओं के लिए इसी अस्पताल पर निर्भर हैं, 'जैसलमेर' जिले के सबसे बड़े अस्पतालों में से एक हमारा अस्पताल, जैसलमेर शहर के आसपास के कई गाँवों को सेवा दे रहा है। अपनी मातृभूमि के उत्थान की गहरी चाहत से प्रेरित होकर, प्रवासी भारतीयों ने चिकित्सा क्षेत्र की ओर रुख किया, क्योंकि उन्हें पर्यटन, खनिज उद्योग और इंदिरा गांधी नहर परियोजना की संभावनाओं के साथ-साथ क्षेत्र के विकास में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका का एहसास हुआ, इस प्रकार स्वास्थ्य सेवा की ज़रूरी ज़रूरतों को पूरा करने की दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ 'श्री माहेश्वरी अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र' ट्रस्ट की स्थापना का निर्णय लिया गया।

स्वर्गीय श्री बालकिशनजी कोठारी के दूरदर्शी नेतृत्व में ट्रस्ट ने अपने मिशन की शुरुआत की। शुरुआत में श्री मगनीराम सारडा और उनके परिवार द्वारा बिना किसी किराए के उदारतापूर्वक प्रदान की गई एक इमारत में स्थित, इस अस्पताल ने ११ दिसंबर, १९९५ को अपनी शुरुआत की, जिसमें २० बिस्तरों की क्षमता थी और डॉ. बी.एल. सांवल मुख्य शल्य चिकित्सक के रूप में इसके प्रमुख थे।

हालाँकि, ट्रस्ट की आकांक्षाएँ अस्थायी सुविधाओं से कहीं आगे तक फैली हुई थीं, अटूट समर्पण के साथ श्री चंपालालजी सारडा ने एक आधुनिक, सर्वसुविधायुक्त अस्पताल के निर्माण के प्रयासों का नेतृत्व किया। प्रसिद्ध वास्तुकार श्री भरतजी राठी की विशेषज्ञता के मार्गदर्शन में ७५,००० वर्ग फुट में फैला यह नया भवन आशा की किरण बनकर उभरा।

५ जुलाई, २००८ को अस्पताल अपने नए निवास में स्थानांतरित हो गया, जो जैसलमेर के स्वास्थ्य सेवा परिदृश्य में एक परिवर्तनकारी अध्याय का प्रतीक था, इसके अलावा स्वर्गीय श्री रघुनाथ सिंह मेहता को एक मार्मिक श्रद्धांजलि स्वरूप, प्रसूति वार्ड की स्थापना चेन्नई की श्रीमती देविका कृष्ण माहेश्वरी के परोपकारी प्रयासों से की गई, व्यक्तिगत क्षति से प्रेरित उनका यह मार्मिक भाव, अस्पताल के महान उद्देश्य को प्रेरित करने वाली करुणा की भावना को दर्शाता है।

चूरू नागरिक संघ मुंबई के
सभी नागरिकों को
हार्दिक शुभकामनाएं

Murli Manohar Ballan

KONNARK

KONNARK POLYCHEM LLP

3, Salasar Commercial Centre, Fatak Road,
Bhayandar (East), Mumbai, Bharat- 401 105

With Best Compliments:

Krishna Kumar Rathi
Mob.: 9869358397 / 9324158397

KRISHN SILK MILLS

Uniform and linen Fabrics
KK Linen Party Wear Shirts

Bulding 47, Cavel Cross Lane No 3, 2nd Roor, Jagruti Mataji Mang,
Dadi Seth Agary lane, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400 002
www.krishnsilkmills.com | krishnmilkmills@gmail.com

H1-19 Gala 3rd Floor Blobal Warehousing,
Near Anjur Phata, Bhiwandi, Maharashtra, Bharat-421 302

श्री लोद्रवापुर जैन तीर्थ

जैसलमेर: लगभग ७५ सेमी. पद्मासन मुद्रा में लोद्रवा पार्श्वनाथ की ऊँची, श्यामवर्णीय प्रतिमा जी एक हजार फणों के साथ सुशोभित, जिन्हें लोद्रवा पार्श्वनाथ दादा के साथ सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ दादा के नाम से भी जाना जाता है।

तीर्थ: यह राजस्थान में जैसलमेर के पास १७ कि. मी 'लोद्रवा गांव' में है।

ऐतिहासिकता: प्राचीन काल में 'लोद्रवा' लोद्र राजपूतों की एक बड़ी और समृद्ध राजधानी थी, यह शहर अपने प्राचीन विश्वविद्यालय के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध था। कहा जाता है कि प्राचीन काल में राजा सागर ने यहाँ पर शासन किया था, उनके दो बेटे श्रीधर और राजधर ने जैन धर्म अपनाया, उन्होंने चिंतामणि पार्श्वनाथ दादा का सुंदर जिनालय बनवाया, इस जिनालय को मुस्लिमों ने नष्ट कर दिया, श्रेष्ठी खिमसी जी ने इस जिनालय का जीर्णोद्धार शुरू किया और उनके बेटे पुंशी ने नवीकरण पूरा किया। रावल भोजदेव और जैसलजी के बीच युद्ध हुआ, जैसलजी विजयी हुए, उसने एक नया शहर बनाया 'जैसलमेर' जो उनकी राजधानी बन गया। श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ की प्रतिमा जी को 'जैसलमेर' लाया गया और वहाँ एक जिनालय जी में प्रतिष्ठित किया गया। श्री थारुशाह ने जिनालय जी का जीर्णोद्धार कराया, लोद्रवा और एक नई प्रतिमा जी की खोज शुरू हुई। सौभाग्य से पाटन के दो कुशल कारीगर असाधारण और सुंदर प्रतिमा जी को मुल्तान ले जाया गया, जो उन्होंने अपने जीवन काल के दौरान बनाई थी। दोनों लोद्रवा में एक रात के लिए रुक गए। दैवीय शक्ति ने उन्हें एक सपने में थारुशाह को प्रतिमाएँ सौपने को कहा। थारुशाह को भी यही सपना आया, सुबह जब थारुशाह ने कारीगरों से प्रतिमाजी का मुल्य पुछा, तो उन्होंने प्रतिमाजी का मुल्य नहीं बताया, बिना मुल्य किए प्रतिमाओं का मुल्य उन्होंने कारीगरों को पर्याप्त सोना दिया और इन प्रतिमाओं को प्राप्त किया, इसलिए यह प्रतिमाएँ 'अमूल्य पार्श्वनाथ' के रूप में भी जाना जाता है, जिस रथ में इन प्रतिमाएँ को लाया गया था आज भी सुरक्षित दर्शनीय है। प्रतिमाओं को विक्रम संवत १६७५ में आचार्य जिनराजसूरिजी की निश्रा में प्रतिष्ठित किया गया, यह एक प्राचीन तीर्थ है, जैसलमेर के पंचतीर्थों में से एक है, इस तीर्थस्थान के अधिष्ठायक धरणेन्द्र देवता चमत्कारी हैं, कई भाग्यशाली लोगों ने दर्शन प्राप्त किए हैं। चार मुख्य जिनालय जी के चारों कोनों में छोटे जिनालय हैं, आदिनाथ, अजीतनाथ, संभवनाथ की प्रतिमाएँ और चिंतामणि पार्श्वनाथ इन चार देरासरों में प्रतिष्ठित हैं, जैसा कि जिनालय जी लोद्रवा गाँव में होने से, मूलनायकदादा को 'लोद्रवा पार्श्वनाथ' के नाम से जाना जाता है। जिनालय जी का नवीनीकरण वि. सं. २०३४ में किया गया, लोद्रवा पार्श्वनाथ की यह प्रतिमाजी मनमोहक, शानदार और चमत्कारी है, यहां कई चमत्कार होते रहते हैं, कुछ समय पहले यहां एक ६ फीट लम्बे धरणेन्द्रदेव के दर्शन भक्तजनों को हुए। भारत-पाक युद्ध के दौरान, जब बमबारी युद्ध चल रहा था, जिनालय जी के शिखर पर पूरे युद्ध की रक्षा के लिए कई लोगों को देखा गया था।

अन्य मंदिर: यहाँ दादावाड़ी तथा घंटाघरण महावीर जी का मंदिर है।

कला और मूर्तिकला के कार्य: पार्श्वनाथ दादा की प्रतिमाजी अत्यन्त चमत्कारिक है, देरासर विशाल व सुंदर बनाया हुआ है, स्तंभों, छत और शिखर में प्रत्येक नक्काशी कुशल शिल्प कौशल का एक ज्वलंत दृश्य प्रस्तुत करता है। यहां की प्रतिमा जी को देखकर, किसी को लगता है कि एक उत्सुकता थी ज्वलंत सुंदरता के लिए मूर्तिकारों के बीच प्रतिस्पर्धा रही होगी, मुख्य मेहराबदार तोरण गेट की कलात्मकता वास्तव में सुंदर है, समवसरण, अष्टापदगिरि और कल्पवृक्ष खूबसूरती से नक्काशीदार और देखने लायक है। प्राचीन लकड़ी के रथ को खूबसूरती को देखा भी जाना चाहिए, ठहरने हेतु धर्मशाला AC कमरे, हाल एवं भोजनशाला की सुन्दर व्यवस्था है।

दिशानिर्देश: जैसलमेर का रेलवे स्टेशन १७ किलोमीटर की दूरी पर है। यहां से बस सेवा और निजी वाहन उपलब्ध हैं।

शास्त्र: जिनालय जी का उल्लेख 'शतदल पद्मायंत्र' और 'लोद्रवपुरी' में, चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन से किया गया है। लोद्रवा पार्श्वनाथ की एक प्रतिमा जी जिरावाला तीर्थ में है, **भीलडियाजी** तीर्थ, चेन्नई में वेपरी में तथा कोलकाता में भी लोद्रवा पार्श्वनाथ जी का मंदिर है।

ट्रस्ट: श्री जैसलमेर लोद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, पोस्ट: लोद्रवपुर, जिला जैसलमेर, राजस्थान, भारत - ३४५००१.

युगप्रधान दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त सूरि का संक्षिप्त परिचय

जैन धर्म के किर्तिमान काल के २४ वें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने केवलज्ञान प्राप्त होने के पश्चात, चतुर्विध संघ साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका की स्थापना हुयी। महावीर स्वामी के मोक्ष पधारने के पश्चात संघ संचालन गणधर सुधर्मा स्वामीजी ने किया, सुधर्मा स्वामी की पाट परम्परा में श्री जिनदत्तसूरि ४१ वें आचार्य बनें और पहले दादा गुरुदेव के नाम से प्रसिद्ध हुए।

श्री जिनदत्तसूरि जी का जन्म विक्रम संवत ११३२ में धवलक्कपुर-धोलका में वाछिगला के गृहांगन में माता वाहड़देवी की कुक्षि से हुआ। माता ने स्वप्र में चंद्रमा देखा, फलस्वरूप्न बालक का नाम सोमचंद्र रखा गया। सोमचंद्र बचपन से ही बहुत प्रज्ञावान एवं वैराग्यवान थे। विक्रम संवत् ११४१ में मात्र ना वर्ष की आयु में ही धर्मदेव उपाध्याय के द्वारा दीक्षित हुए और विक्रम संवत ११६९ वैशाख सुदी को आपको चित्तौड़नगर में विराट जनमेदिनी के समक्ष आचार्य पद से विभूषित किया गया।

साहित्य साधना:

आचार्य श्री जिनदत्तसूरि की रचनाओं को तीन भागों में विभाजित किया जा

सकता है...
१. स्तुति परक साहित्य
२. औपदेशिक साहित्य
प्रकीर्णक साहित्य

गणधर स्तुति परक रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ उच्चकोटि का उत्तम बन्ध है। प्राकृत भाषा में लिखा गया यह ग्रंथ, भाषा व विषयवस्तु की दृष्टि से अद्भुत है, इसी प्रकार गणघर सप्ततिका भी स्तुति परक अनूठा ग्रंथ है।

औपदेशिक साहित्य की गणना में उनका प्रश्नोत्तर शैली में लिखा संदेश दोहावली ग्रन्थ समाधान देता है, इसी प्रकार उत्सूर पदोद्घाटन कुलक, चैत्यवंदन कुलक, उपदेश कुलक आदि अनूठी कृतियां औपदेशिक शैली में लिखी गई हैं। उपदेश धर्म रसायन, काल स्वरूप कुम्लक, चर्चरी आदि ग्रंथों की रचना उस समय की बोलचाल भाषा में अर्थात् अपधेश भाषा में है, इन ग्रंथों में इनके पांडित्य, शालीय अवगाहन व गंभीर चिंतन परिलक्षित होता है।

अंतिम समय का चमत्कार

वि.सं. १२११ का उनका चातुर्मास अजमेर में होना था, अजमेर के राजा अर्णोराज और सकल संघ की विनंती सुनकर उन्होंने कहा कि 'अजमेर' मैं आऊंगा, पर एक दिन के लिये या एक चातुर्मास के लिये नहीं, अपितु सदा-सदा के लिये। अजमेर की भूमि के आमंत्रण को मुझसे स्वीकार करना ही है, क्योंकि यही नियति का संदेश है और नियति के संदेश को कभी भी कोई भी अन्यथा नहीं कर सकता। गुरुदेव श्री अजमेर पधारे। आषाढ़ सुदि ११ का मंगल प्रभात, गुरुदेवश्री ने आगमन स्वीकार कर लिया था, नवकार महामंत्र का जाप प्रारंभ था, वे अपने ध्यान में लीन थे। आत्मलीनता के उस वातावरण में गुरुदेवश्री का स्वर्गवास हो गया।

दादा गुरुदेव व दादावाड़ी

इस जग में आज कोई ऐसा जैन नहीं होगा जो पूज्य दादा गुरुदेव के नाम से परिचित न हो। केवल जैनी ही नहीं जैनेत्तर भी अधिकांश व्यक्ति दादा के नाम से पूर्ण परिचित हैं, तभी तो देश के कोने-कोने में 'दादावाड़ी' स्थापित है।

चमत्कारी वस्त्र

जब गुरुदेव के देह का अग्रिसंस्कार किया गया, तब एक दिव्य चमत्कार हुआ, ऐसा आज तक कभी नहीं हुआ, कभी नहीं सुना गया, उनकी काया जल गई, परंतु उनके द्वारा धारण किए गए वस्त्र नहीं जले। न चादर जली, न चोलपट्टा जला, न मुहंपत्ती जली। यह चमत्कार देखकर लोग विस्मय से भर उठे, तभी देववाणी हुई ये चमत्कारी वस्त्र संघ के सदा संकटों से बचायेंगे, तब से गुरुदेव के ये चमत्कारी वस्त्र जैसलमेर के ज्ञान भंडार में सुरक्षित हैं।

६ से ८ मार्च २०२६ को जैसलमेर में होगा चादर महोत्सव

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ समुदाय के प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त सुरीश्वर के ८७१ वर्ष पुराने अग्निसंस्कार में नहीं जलने वाले चादर, चोलपट्टा और मुंहपत्ती का चादर महोत्सव ६ से ८ मार्च २०२६ को स्वर्ण नगरी जैसलमेर में आयोजित किया जा रहा है, इसमें देशभर में फैले ३० हजार भक्त हिस्सा लेंगे।

चादर महोत्सव आयोजन समिति के मंत्री पदम कुमार टाटिया और संयोजक तेजराज गुलेच्छा के अनुसार महोत्सव का उद्देश्य विश्वशांति के लिए प्रयास करना है, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में आरएसएस के सरसंघचालक मोहन भागवत को आमंत्रित करने का प्रयास किया गया है। श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर के प्रकाशचंद लोढ़ा के अनुसार चादर महोत्सव में आने वाले श्रद्धालुओं को जैसलमेर में स्थित प्राचीन जैन ज्ञान भंडार, लोद्रवा पार्श्वनाथ तीर्थ, अमर सागर तीर्थ, ब्रह्मासर तीर्थ के दर्शन वंदन का लाभ भी मिल सकेगा।

जय जिनेंद्र! जय भारत!

'हरि हर' लेंगे जीवन की सब पीड़ा
आओ हम मिलकर उठाएं गौ संवर्धन का बीड़ा!
Jagdish Prasad Maheshwari (Phophaliya)
9322271466
504, Bharat Arize, Ganpati Niwas, Bangur Nagar , Link Road, Goregaon (w), Mumbai, Maharshtra, Bharat- 400104

With best complements
NAVEEN BHOOTRA
Mob.: 9898035181
VANAASTHAL
वनस्थल
Manufacturer And Wholesalers Of Plywood
76-77 Jalaram Industrial Society, Ply Bazar,
Near Navjeevan Circle, Surat, Gujarat, Bharat- 395007
Plywood | Timber | Laminate | Veneer | Decorative Surfaces

भारत को 'BHARAT' ही बोलेंगे

जय भारत! जय-जय राजस्थान

Remove **INDIA** Name From The Constitution

महेंद्र कुमार सिंह मोहता
कोषाध्यक्ष तमिलनाडु माहेश्वरी फाउंडेशन
जैसलमेर निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: 9380308000

महेंद्र जी अपनी पैतृक भूमि 'जैसलमेर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'जैसलमेर' के दीवान सालिम सिंह मोहता जी हमारे पूर्वज थे, उनकी हवेली आज भी मौजूद है, जो आज राजस्थान सरकार द्वारा एक हेरिटेज के रूप में रखी गई है, आज भी लोगों के बीच हमारा बहुत ही सम्मान है। सामाजिक दृष्टिकोण से 'जैसलमेर' बहुत ही उत्तम है, यहां हर समाज के लोग बसे हैं और सभी के बीच परस्पर सामंजस्य बहुत ही उत्तम है। जैसलमेर रेतीला स्थान है, जो अपने पर्यटन के लिए विशेष जाना जाता है, विशेषकर डिजर्ट सफारी के लिए लोग 'जैसलमेर' पसंद करते हैं। 'जैसलमेर' का किला और यहां की हवेलियां बहुत ही सुंदर है, पटवा की हवेली उल्लेखनीय है। भारत का यह एकमात्र ऐसा किला है जहां आम नागरिक बसे हैं। किले पर स्थित लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर बहुत ही प्रसिद्ध है, इसके अलावा 'जैसलमेर' में पाकिस्तान की सीमा से लगा हुआ तनोट माता जी का मंदिर उल्लेखनीय है, कहते हैं पाकिस्तान के द्वारा जब भी यहां बमबारी हुई है तो एक भी बम या गोला बारूद यहाँ पर नहीं फटे, क्योंकि यहां की तनोट माता की कृपा से ही संभव हुआ है और आज मिलिट्री के लोग इस मंदिर की देखरेख करते हैं, पहले 'जैसलमेर' में पानी की किल्लत बहुत होती थी, राजस्थान नहर आने से यहां पानी की बहुत ही सुविधा हो गई है, खेती-बाड़ी भी बहुत अच्छी होती है, यहां का 'गडीसर तालाब' बहुत ही प्रसिद्ध है। खान-पान की चीजों में यहां बूंदी से बना लड्डू 'घोटुआ' ही बहुत प्रसिद्ध है, पर्यटन के लिए आज पूरे भारत ही नहीं, विदेशों से भी सैलानी यहां आते हैं और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'जैसलमेर' में......

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि विश्व में किसी भी देश के दो नाम नहीं है फिर हमारे देश के कई नाम क्यों? हमारे देश का भी एक ही नाम और एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'!

महेंद्र जी मूलतः 'जैसलमेर' के निवासी हैं, आपका जन्म व शिक्षा 'चेन्नई' में संपन्न हुयी है, यहां आप प्लाईवुड के करोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, पूर्व में राजस्थानी एसोसिएशन तमिलनाडु के सचिव रहे हैं, मद्रास महेश्वरी चैरिटेबल ट्रस्ट के भी मैनेजिंग ट्रस्टी और तमिलनाडु महेश्वरी फाउंडेशन के कोषाध्यक्ष है, राजस्थान यूथ एसोसिएशन मद्रास मेट्रो के १९९९-२००० में अध्यक्ष रहे हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं।

जय भारत!

-मेरा राजस्थान

मदन मोहन मालपानी
व्यवसायी व समाजसेवी
जैसलमेर निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८४१२२१०८१

मदनमोहन जी अपनी जन्मभूमि 'जैसलमेर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'जैसलमेर' आज राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक जाना जाता है, पहले के मुकाबले आज का 'जैसलमेर' पूरी तरह से बदल गया है, पहले यहां सुविधाओं की कमी थी, स्कूल, कॉलेज भी बहुत कम थे, पर आज यहां कई शैक्षणिक संस्थान खुल गए हैं, आवागमन की भी सुविधा अच्छी हो गई है, पहले जहां लोग ऊंट गाड़ियों से सफर किया करते थे, आज चार चक्के वाहन से सफर करते हैं, लोगों के जीवन स्तर में भी बहुत वृद्धि हुई है 'जैसलमेर' से सड़क और रेल संपर्क माध्यम बहुत ही उत्तम है, यह नेशनल हाईवे से भी जुड़ा हुआ है। यहां का सामाजिक वातावरण भी उत्तम है, हर समाज के लोग बसे हुए हैं, यहां की हस्तकला और घोटूआ लड्डू मिठाई बहुत ही प्रसिद्ध है। पर्यटन की दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां का सबसे प्राचीन और प्रमुख मंदिर लक्ष्मीनाथ जी, किले के ऊपर स्थित है, इसके अलावा गजरूप सागर, भादरिया जी में माता का मंदिर, जैसे कई देवस्थान हैं, यहां कई प्राचीन हवेलियां हैं, जहां आज भी लोग निवास करते हैं। जैसलमेर का किला अपने आप में एक विशेष पहचान रखता है, जिसे सोनार किला भी कहा जाता है, जैसलमेर में कई संग्रहालय भी हैं, यहां कई झील भी हैं, जो जैसलमेर की प्राकृतिक सुंदरता को और बढ़ा देते हैं और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'जैसलमेर' में....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए भारत!

मदनमोहन जी मूलतः राजस्थान स्थित 'जैसलमेर' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले ३० सालों से आप 'चेन्नई' में बसे हैं और कपड़ा व्यापर से जुड़े हैं, साथ ही माहेश्वरी सभा चेन्नई और माहेश्वरी युवा सत्संग समिति के सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

-मेरा राजस्थान

मनोज बिसानी
अध्यक्ष श्री महेश मित्र मंडल सूरत
जैसलमेर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: 9374722809

मनोज जी अपनी जन्मभूमि 'जैसलमेर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'जैसलमेर' आज पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है, इसे 'गोल्डन सिटी' के नाम से जाना जाता है। आज 'जैसलमेर' का बहुत अधिक विकास हुआ है, यहां कई होटल व रेस्टोरेंट बन गए हैं, डेस्टिनेशन वेडिंग के लिए भी 'जैसलमेर' प्रसिद्ध है, अन्य सुविधाएं भी बढ़ गई हैं, आवागमन के साधन बढ़ गए हैं, पानी की उत्तम व्यवस्था होने से यहां कृषि भी होने लगी है, जिसमें जीरा, बाजरा, अनार, मूंगफली के पैदावार अधिक होती है, जैसलमेर में टूरिज्म के साथ-साथ येलो स्टोन पर नक्काशी का काम भी बड़े पैमाने पर होता है, जिसका निर्यात देश के विभिन्न भागों में किया जाता है, इस कारण यहां की आर्थिक स्थिति भी उत्तम है। सामाजिक वातावरण भी उत्तम है, परस्पर प्रेम व्यवहार आज भी बना हुआ है, यहां हर समाज के लोग बसे हैं, माहेश्वरी समाज के हर खाप के लोग यहां बसे हुए हैं, हर खाप की अलग-अलग पाडे हैं, ऐसे यहां १५-२० पाडे हैं, इसके अलावा जैन समाज, भाटिया समाज, राजपूत समाज के भी लोग बसे हुए हैं। पर्यटन के लिए यहां से ४० किलोमीटर दूरी पर स्थित 'सम' नामक स्थान डेजर्ट जीप सफारी के लिए जाना जाता है, पर्यटकों के लिए यहां रात रुकने के लिए उत्तम व्यवस्था है, टेंट लगते हैं, जहां नृत्य संगीत हर चीज का आनंद लिया जा सकता है, यहां से १२० किलोमीटर की दूरी पर पाकिस्तान की सीमा से लगा हुआ तनोट माता जी का मंदिर है जो विशेष उल्लेखनीय है, यहां माहेश्वरी समाज द्वारा अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित हॉस्पिटल का निर्माण किया गया है, जैसलमेर के घोटुआ लड्डू बहुत ही प्रसिद्ध हैं और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'जैसलमेर' में.....

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'!

मनोज जी मूलतः 'जैसलमेर' के निवासी हैं, आपका जन्म जैसलमेर व शिक्षा चेन्नई में संपन्न हुई है, ३८ सालों से 'सूरत' में बसे हैं और कपड़ा व्यवसाय से जुड़े हैं। सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, श्री महेश मित्र मंडल के अध्यक्ष हैं, साथ ही जिला माहेश्वरी सभा वेसु के उपाध्यक्ष हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

-मेरा राजस्थान

नवीन भुतड़ा
व्यवसायी व समाजसेवी
जैसलमेर निवासी सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: 9898035181

नवीन जी अपनी जन्मभूमि जैसलमेर की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि जैसलमेर अपने आप में एक अद्भुत शहर है, पूरी दुनिया में उसके जैसा दूसरा शहर नहीं है, यह भारत का एक ऐसा शहर है, जहां सभी जातियों में जितने भी पंथ हैं, सभी के अपने-अपने मोहल्ले बने हुए हैं, जैसे ब्राह्मण हैं, तो ब्राह्मण कॉलोनी में पुरोहित कॉलोनी, आदि सभी के अपने-अपने मोहल्ले हैं, वैसे ही माहेश्वरी समाज के अलग-अलग उपनाम वालो के अलग-अलग मोहल्ले बने हुए हैं। विश्व में सिर्फ 'जैसलमेर' किला एक मात्र ऐसा किला है, जहां आम आदमी बसे हुए हैं, जिसमें आज भी १० हजार लोग बसे हैं। पहले 'जैसलमेर' एक गांव जैसा था, आज शहर बन गया है, जहां पर १८० से अधिक होटल हैं, हर तरह की सुविधा उपलब्ध है, आवागमन के साधन अच्छे हो गए हैं। मेरा गांव रामगढ़ जैसलमेर से ६० किलोमीटर दूर है, वहां से जब जैसलमेर आते थे तो तीन दिन लगते थे और पानी की सुविधा नहीं थी, इसलिए मेरे दादाजी लीलाधर जी भुतड़ा ने बड़े-बड़े दो टैंक बनाए थे, जो आज भी विद्यमान हैं यदि बारिश हो जाती, तो टैंक में जो पानी जमा होता था, वह कई वर्षों तक रहता था जो उनके नाम से ही प्रसिद्ध है। पर्यटन के दृष्टिकोण से भी 'जैसलमेर' बहुत ही उत्तम है, यहां कई देवी देवताओं के मंदिर हैं, और जैन समाज का 'लोदरवा जैन तीर्थ' है, जहां एक कल्पवृक्ष भी है। 'जैसलमेर' प्राचीन समय में अरब देशों से व्यापार करने का मुख्य केंद्र हुआ करता था, यहां एक गांव है 'कुलधरा', जो आज पूरी तरह से वीरान है फिर भी हेरिटेज के रूप में जाना जाता है। आज 'जैसलमेर' में कृषि भी बड़े पैमाने पर होती है, हर तरह की फसलें उगाई जाती हैं, 'जैसलमेर' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह क्षेत्रफल की दृष्टि में एशिया का सबसे बड़ा शहर है और जनसंख्या की दृष्टि से सबसे छोटा शहर है। शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में भी यहां पहले की अपेक्षा प्रगति हुई है, यहां माहेश्वरी समाज द्वारा १५० बेड वाला माहेश्वरी अस्पताल का निर्माण किया गया है, इसके सारे ट्रस्टी माहेश्वरी समाज के हैं और उनके द्वारा ही संचालन होता है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'जैसलमेर' में...

भारत को 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, जो भरत राजा के नाम पर पड़ा है।

नवीन जी का जन्म और शिक्षा 'जैसलमेर' में ही संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षों से आप सूरत में बसे हैं और प्लाईवुड के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक रूप से भी सक्रिय हैं, सूरत स्थित न्यू सिटी लाइट माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

विशेष: जैसलमेर में किसी भी प्रकार की सहायता के लिए नवीन जी से संपर्क किया जा सकता है।

दिलीप गंगादास मोकाती

व्यवसायी व समाजसेवी
जैसलमेर निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: 9444031501

दिलीप जी अपनी जन्मभूमि 'जैसलमेर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'जैसलमेर' को स्वर्ण नगरी कहा जाता है, क्योंकि यहां सारे मकान पीले पत्थर से बने हुए हैं, फिल्म निर्माता सत्यजीत रे इस क्षेत्र को लेकर 'सोनार किला' नामक फिल्म भी बनाई थी, जो काफी चर्चित रही। पहले और आज के 'जैसलमेर' में बहुत ही बदलाव आ गया है, पहले का 'जैसलमेर' किले के परकोटे तक ही सीमित था, आज बहुत दूर तक फैल चुका है। रेलवे भी पोकरण तक ही था, आज का 'जैसलमेर' बहुत बढ़ गया है, आवागमन के साधन बढ़ गए हैं, पर्यटकों का मुख्य केंद्र बन गया है, यहां देश-विदेश से सैलानी आते हैं। 'जैसलमेर' के हर घर में नक्काशी वाले पत्थर, जालियां, झरोखे दिखाई देते हैं, कई फिल्मों की शूटिंग 'जैसलमेर' में हुई है, यहां कई पर्यटन स्थल हैं, जैसे किले पर स्थित लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर और जैन मंदिर इसके अलावा 'जैसलमेर' में कई हवेलियां हैं, जिनमें पटवा की हवेली, मोती महल, हाथीवाली हवेली आज हेरिटेज में गिना जाता है, जैसलमेर से कुछ दूरी पर स्थित है 'लोदरवा जैन तीर्थ', जो बहुत ही भव्य सुंदर नक्काशीयों से परिपूर्ण है, पूरे भारत ही नहीं विदेशों से भी जैन श्रद्धालु यहां दर्शन के लिए आते हैं, कल्पवृक्ष भी जैसलमेर में स्थित है, 'सम' नामक स्थान मुख्य टूरिस्ट प्लेस है, जहां पर टेंट लगते हैं, रात को चमकता है, यहां ऊंट की सवारी की जाती है, आजकल तो रेत पर चलने वाली गाड़ियों से भी सफारी होती है, इसके अलावा 'जैसलमेर' में कई होटल और रिसॉर्ट भी खुल गए हैं, जहां लोगों के ठहरने की उत्तम व्यवस्था है। धार्मिक दृष्टिकोण से भी क्षेत्र बहुत ही महत्वपूर्ण है, यहां तनोट माता जी का मंदिर बहुत ही मान्यता प्राप्त है, जो ६० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत उत्तम है, यहां माहेश्वरी समाज के कई मंदिर, भवन और सामाजिक संस्थाएं कार्यरत हैं, यहां माहेश्वरी समाज द्वारा अस्पताल का निर्माण किया गया है, जो अत्याधुनिक सुविधाओं से उत्तम है, इसके अलावा राजा-महाराजाओं की छतरी, गड़ीसर तालाब, अमर सागर जैसे कई प्रमुख स्थल हैं। शिक्षा की दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र उत्तम है, खानपान की चीजों में यहां की घोटुआ मिठाई विशेष जाने जाती है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'जैसलमेर' में....

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत', हमारे देश की वास्तविक पहचान है।

दिलीप जी मूलतः राजस्थान स्थित 'जैसलमेर' के निवासी हैं, आपका जन्म 'जैसलमेर' में व शिक्षा महाराष्ट्र में संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षों से आप 'चेन्नई' में बसे हैं और गारमेंट व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं, चेन्नई माहेश्वरी समाज के सदस्य हैं। जय भारत!

-मेरा राजस्थान

जैसलमेर का प्राचीनतम तीर्थ श्री लोद्रवा पार्श्वनाथदादा के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Pratap Singh Mehta

Shri Jaisalmer Lodrawpur Parshwnath Jain Swetamber Trust

Trustee

9826814308

Trustee 116, Anurag Nagar, Jain Mandir ke Samne,
Near Press Complex, Indore,
Madhya Pradesh, Bharat- 452011

गो पालीं तब ही बने, कान्हा जी गोपाल।
दूध-दही से वे करें, सब को मालामाल।
।सदियों का इतिहास हमारा, गौ-संवर्धन अपनाना है

LALIT BHUTRA
Mob- 9840576391

VINAY MARKETING

#14, Godown Street,
Tamil Nadu, Chennai- 600001
Email: vinaymarketing14@gmail.com

रविप्रकाश बगड़िया
सचिव चुरु नागरिक संघ
चूरू निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: 9022353246

रविप्रकाश जी 'चूरू नागरिक संघ' के बारे में कहते हैं कि 'चूरू नागरिक संघ' की स्थापना १९७७ में हुई थी, जिसमें मुख्य भूमिका लक्ष्मीनारायण मंडावेवाला, शंकरलाल सरावगी व बनवारीलाल कंदोई व अन्य की मुख्य भूमिका रही, धीरे-धीरे यह संघ आगे बढ़ा और आज एक वृक्ष की तरह खड़ा है, इस संघ की स्थापना का उद्देश्य यही था कि मुंबई में बसे 'चूरू' नागरिकों का मेल मिलाप हो, वर्ष में दो कार्यक्रम दीपावली व होली का होता था, धीरे-धीरे 'चूरू' वालों को लगने लगा कि हमें अपनी पैतृक भूमि के लिए भी कुछ ना कुछ करना चाहिए, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर 'चूरू नागरिक संघ' द्वारा चूरू में जरूरतमंद विद्यालयों व विद्यार्थियों को स्कूल व लाइब्रेरी से जुड़े संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं, समय-समय पर आई कैंप भी लगते है, साथ ही जरूरतमंद महिलाओं को सिलाई मशीन भी दी जाती है, चूरू पिंजरापोल व शमशान भूमि में भी कुछ निश्चित राशि हर वर्ष सहयोग के रूप में दी जाती है, इस तरह यह संघ आज भी निरंतर कार्यरत है। २ नवंबर को हुए 'चूरू नागरिक संघ' दीपावली सम्मेलन में भव्य सांस्कृतिक, धार्मिक व रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसमें ३०० से अधिक लोगों के उपस्थिति रही, साथ ही युवाओं को भी जोड़ने के लिए उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में मुकाम हासिल करने पर पुरस्कृत किया गया, समय-समय पर संघ द्वारा वाटर पार्क भी ले जाया जाता है, जिससे युवा भी संघ, समाज से जुड़े।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य अपने देश का एक नाम रहना चाहिए 'भारत'!

रविप्रकाश जी का जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'चूरू' में ही संपन्न हुई है, १९७३ से आप मुंबई में बसे हैं और प्रॉपर्टी के कारोबार व टेक्सटाइल कारोबार से जुड़े रहे, वर्तमान में सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं, चूरू नागरिक संघ के सचिव पद पर कार्यरत हैं, यथासंभव अन्य सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

-मेरा राजस्थान

कृष्ण कुमार राठी
व्यवसायी व समाजसेवी
जैसलमेर निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८६९३५८३९७

कृष्ण कुमार जी अपनी पैतृक भूमि 'जैसलमेर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थल में से 'जैसलमेर' प्रमुख है! जैसलमेर अपनी डिजर्ट सफारी के लिए जाना जाता है, यहां कई पर्यटन स्थल हैं, जो लोगों के आकर्षण का मुख्य केंद्र है, यहां का गोल्डन फोर्ट बहुत ही सुंदर है, इस किले के ऊपर लक्ष्मीनारायण जी का बहुत ही प्राचीन और भव्य मंदिर है व तनोट माता जी का मंदिर बहुत प्रसिद्ध है, इसके अलावा तीन-चार देवी-देवताओं के मंदिर हैं जिनकी रक्षा हमारे फौजी भाई करते हैं, इसके अलावा डबराय का मंदिर उल्लेखनीय है, एक तरफ जैसलमेर में रेगिस्तान है, तो दूसरी तरफ यहां कई झील भी हैं, यहां का गड़ीसर झील और संभ झील बहुत ही उल्लेखनीय है, जहां पर ठंड के मौसम में सैलानियों की भारी संख्या उमड़ती है, टेंट भी लगते हैं और भी कई रमणीय स्थान है 'जैसलमेर' में, शिक्षा की दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत उत्तम है, यहां तीन-चार केंद्रीय विद्यालय है, लड़कियों के लिए अलग से विद्यालय और महाविद्यालय है और भी कई शिक्षण संस्थान है, यह क्षेत्र पाकिस्तान की सीमा से लगा हुआ है, यहां कई सुंदर और प्राचीन हवेलियां भी हैं, जैसलमेर अपनी सुंदर, प्राचीन कला संस्कृति और हस्तकला के लिए भी जाना जाता है, यहां पर चादरों पर हैंड प्रिंट होता है, जो बहुत ही सुंदर होता है, जैसलमेर में एक पत्थर प्राप्त होता है, जिसमें दही जम जाती है, यहां के सूफी गाने, ऊंट की सफारी बहुत ही रोचक है, इसके अलावा खान-पान की चीजों में घोटुआ मिठाई बहुत प्रसिद्ध है, जो अन्यत्र कहीं नहीं पाया जाता, इसके अलावा मिर्ची बड़े, प्याज की कचोरी, दही बड़े व अन्य खाद्य सामग्री भी बड़ी रुचकर होती है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'जैसलमेर' में.....

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' नाम हमारे देश की वास्तविक पहचान है, अतः हर भाषा में अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'!

कृष्ण कुमार जी मूलतः 'जैसलमेर' के निवासी हैं, आपका जन्म व शिक्षा 'चेन्नई' में संपन्न हुई है, पिछले १५ सालों से मुंबई में बसे हैं और टेक्सटाइल व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही मलाड-बोरीवली माहेश्वरी सभा के सदस्य हैं, ब्लड डोनेशन कैंप से भी जुड़े रहते हैं। जय भारत!

-मेरा राजस्थान

समस्त राजस्थानी समाज की एकमात्र पत्रिका
'मेरा राजस्थान' के सभी पाठकों को विश्वनाथ भरतिया परिवार
की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं!

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए अब तो इंडिया नहीं

अनुपम सुदा

व्यवसायी व समाजसेवी
जैसलमेर निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: 9444016741

अनुपम जी अपनी पैतृकभूमि 'जैसलमेर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के जैसलमेर में काफी अंतर आ गया है पहले सीमित क्षेत्रफल में बसा हुआ था और आज का 'जैसलमेर' कमर्शियल क्षेत्र बन गया है, जो अपने टूरिज्म के लिए विशेष जाना जाता है, यहां 'सम' नामक स्थान डिजर्ट सफारी के लिए विशेष प्रख्यात है, इसके अलावा 'जैसलमेर' का किला भी बहुत ही भव्य सुंदर है, 'जैसलमेर' में कई मंदिर और राजा-महाराजाओं की छतरियां, तालाब, बावड़ी है, जो 'जैसलमेर' की सुंदरता को और बढ़ा देते हैं, विशेष ठंड के दिनों में अर्थात नवंबर से मार्च तक यहां देश-विदेश से पर्यटकों का आना-जाना लगा रहता है। यहां पर्यटकों के रहने ठहरने की भी उत्तम व्यवस्था है, कई होटल और रेस्टोरेंट भी खुले हैं, जिससे यहां की आर्थिक व्यवस्था की और भी प्राप्त हुई है, इसके अलावा यहां के पीले पत्थर भी बहुत विख्यात हैं, खेती-बाड़ी भी अच्छी होती है। शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र में अभी भी उच्च सुविधाओं की कमी है, आज भी यहां के विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए अन्य क्षेत्रों में और चिकित्सा के लिए बड़े-बड़े महानगरों में जाना पड़ता है, उचित चिकित्सा व्यवस्था न होने के कारण यहां के लोगों को कई दिक्कतें उठानी पड़ती है, जिसके कारण के समय पहली मृत्यु भी हो जाती है, इसीलिए सरकार द्वारा यह निवेदन है कि टूरिज्म के साथ-साथ चिकित्सा व शिक्षा के क्षेत्र को भी बढ़ावा दिया जाए, यहां माहेश्वरी समाज का भव्य हॉस्पिटल भी हैं। 'जैसलमेर' रेल, सड़क और हवाई मार्ग से जुड़ा हुआ है, हवाई मार्ग यहां सिर्फ नवंबर से मार्च तक चलते हैं, जो दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु से जुड़े हैं। यहां फरवरी महीने में 'मरू का मेला' लगता है, हजारों की संख्या में लोग यहां आते हैं। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, हर समाज के लोग बसे हुए हैं, आज 'जैसलमेर' में विशेष कर बाहरी लोगों की संख्या अधिक बढ़ गई है, माहेश्वरी समाज के यहां मंदिर भवन भी बने हुए हैं और भी कई विशेषताएं हैं हमारे जैसलमेर में....

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में में आपका कहना है कि यह राजनीतिक मुद्दा है, इसमें आम नागरिक कुछ नहीं कर सकता।

अनुपम जी मूलत: 'जैसलमेर' के ही निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'चेन्नई' में संपन्न हुई है, यहां टेक्सटाइल के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी यथा संभव सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

-मेरा राजस्थान

राजेश कुमार सोंथलिया

उद्योगपति व समाजसेवी
मंडावा निवासी -कोलकात्ता प्रवासी
भ्रमणधवनि :९८३१० ७७१३०

राजेश कुमार जी मूलतः राजस्थान स्थित 'मंडावा' के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'कोलकाता' में सम्पन्न हुई है। पिछले ४५ वर्षों से पावर, स्टील, इंजीनियरिंग उत्पादन से जुड़े हैं, साथ ही अन्य कारोबार में भी संलग्न हैं। आपके व्यावसायिक उपलब्धियों के लिए भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, वित्त मंत्रालय से पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुआ है साथ ही भारत में एफडीआई को आकर्षित करने और विनिर्माण तथा सेवा क्षेत्र में विकास के लिए भारत और विदेशों में १०० से अधिक सेमिनार रोड शो, ओपन हाउस आयोजित किए हैं। भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा प्रायोजित ईओयू और एसईजेड के निर्यात संवर्धन परिषद के विभिन्न उप समितियों में अध्यक्ष, संस्थापक व संयोजक हैं, बोर्ड ट्रेड के सदस्य रहे हैं, चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज कोलकाता में भी कई पदों पर रहे हैं। आप सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं, अनेक संस्थाओं से जुड़े हैं, जैसे अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन, जमायमाता चेरिटेबल ट्रस्ट, पिंजरापोल सोसायटी ट्रस्ट, साल्टलेक शिक्षा सदन, साल्टलेक शिक्षा निकेतन के ट्रस्टी हैं। काशी विश्वनाथ सेवा समिति, समर्पण के ट्रस्टी, महाराजा अग्रसेन समिति अध्ययन संस्थान जैसे कई संस्थानों से जुड़े हैं।

राजेश जी आज की युवा पीढ़ी के बारे में बताते हुए कहते हैं कि आज की युवा पीढ़ी पढ़ाई-लिखाई में बहुत ध्यान दे रही है, ये अच्छी बात है, मां बाप की सेवा करनी चाहिए, तीर्थ करवाने चाहिए, नौकरी में नहीं जाकर व्यापार को आगे बढ़ाएं, बेरोजगारों को रोजगार दें, युवाओं को पूरी मेहनत और लगन के साथ देश की प्रगति में पूरा सहयोग देना चाहिए, जिससे २०४७ में 'विकसित भारत' परिकल्पना, जो हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने ली है उसे पूरा किया जा सके।

गौमाता को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए, गाय माता की सेवा करनी चाहिए, कुछ मान्यताओं के अनुसार गौमाता की सेवा करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है, सनातन धर्म में 'गौमाता' को पूजनीय माना गया है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' इंडिया नहीं, अंतरराष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में राजेश जी का कहना है कि निस्संदेह भारत को केवल 'भारत' ही बोलना चाहिए, इंडिया नहीं, अंग्रेजों का दिया हुआ नाम है इंडिया, हम सनातनी हैं, मां भारती की संतान हैं, इसीलिए हमारे देश का नाम केवल रहे 'भारत'! जय भारत!

-मेरा राजस्थान

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें
Remove INDIA Name From The Constitution

राहुल साँवल

पूर्व मंत्री तमिलनाडु केरल पाँडिचेरी माहेश्वरी युवा संघटन

जैसलमेर निवासी-चेन्नई प्रवासी

भ्रमणध्वनि: 9940134750

राहुल जी अपनी पैतृक भूमि 'जैसलमेर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मेरे बचपन का 'जैसलमेर' एक गांव था, पर सुविधाओं से वंचित था, पानी की व्यवस्था नहीं थी, आवागमन के अच्छे साधन नहीं थे, पर आज 'जैसलमेर' टूरिस्ट स्पॉट बन जाने के कारण यहां बड़े-बड़े ५ स्टार होटल, रेस्टोरेंट अत्याधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण है। विदेशी सैलानियों के आवागमन से यहां के लोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी हुई है। पर्यटन में यहां का किला बहुत प्रसिद्ध है, यह विश्व का एकमात्र ऐसा किला है जहां हजारों परिवार निवास करते हैं, यह रहिवासी किला हैं, इसके अलावा किले के भीतर ही लक्ष्मीनाथ जी के साथ जैन मंदिर भी है, लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर लोगों की श्रद्धा का मुख्य केंद्र है। 'जैसलमेर' से थोड़ी दूरी पर 'लोदरवा' नामक स्थान जो जैन लोगों का प्रमुख तीर्थ स्थल है, पूरे भारत से जैन यहां दर्शन के लिए आते हैं, इसके अलावा कई प्राचीन व सुंदर हवेलियां हैं, जिनमें पटवा की हवेली, नथमल की हवेली, मोती महल है जो सुंदर नक्काशी से परिपूर्ण है, जिसे सरकार द्वारा हेरिटेज भी घोषित किया गया है, इसके अलावा यहां का 'गड़ीसर तालाब' उल्लेखनीय है, जहां लोग नौका विहार करते हैं, कई फिल्मों की शूटिंग भी यहां हुई है, इंदिरा गांधी नहर आने से 'जैसलमेर' में पानी की भी सुविधा अच्छी हो गई है, आज खेती-बाड़ी भी यहां अच्छी होने लगी है, गवार, सांगरी, जीरा, रायडा जैसे फसलों की पैदावार अधिक होती है, आज यहां अतुल कंपनी द्वारा खजूर की भी फसल बड़े पैमाने की जाने लगी है, जिसका निर्यात भी किया जाता है। सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, हर धर्म-समाज के लोग बसे हैं, यहां मुख्यतः माहेश्वरी, ब्राह्मण और भाटिया समाज की संख्या अधिक है। माहेश्वरी समाज का यहां महेश भवन, मंदिर और अत्याधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण अस्पताल ही बनाया हुआ है। शिक्षा की दृष्टिकोण से उत्तम है, आज कई शैक्षणिक संस्थान खुले हैं, ऐसी और कई विशेषताएं हैं हमारे 'जैसलमेर' में.....

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है क निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'!

राहुल जी मूलतः 'जैसलमेर' के निवासी हैं, आपका जन्म मध्य प्रदेश के पिपरिया में और शिक्षा जेतपुर व चेन्नई में संपन्न हुई है, वर्तमान में आप चेन्नई में बसे हैं और शेयर मार्केट के कारोबार से जुड़े हैं। आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते है, माहेश्वरी सभा चेन्नई के सदस्य हैं, माहेश्वरी युवा मंडल (चेन्नई,तमिलनाडु, केरला) के सह मंत्री और मंत्री पद पर कार्यरत रहे हैं। नवयुवकों को शेयर मार्केट से जुड़ी जानकारियां के लिए वक्तव्य देते हैं। जय भारत!

-मेरा राजस्थान

सीए महेंद्रसिंह भंसाली

अध्यक्ष श्री जैसलमेर लौद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट

जैसलमेर निवासी-जोधपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: 9352359512

महेंद्र सिंह जी अपनी जन्मभूमि 'जैसलमेर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि ४०-५० साल पहले का 'जैसलमेर' बहुत ही शांत और पूरी तरह देहात था, जनसंख्या भी कम थी, आवागमन के साधन नहीं थे, पानी की व्यवस्था नहीं थी, १९७८ में जब सत्यजीत रे द्वारा 'सोनार किला' नामक फिल्म बनाई गई, तब 'जैसलमेर' लोगों की नजरों में आया और विदेशी पर्यटकों का यहां आना प्रारंभ हुआ, उसके पहले सिर्फ जैन धर्मावलम्बी ही 'लोदरवा जैन तीर्थ' में दर्शन के लिए आते थे। आज का जैसलमेर अपने टूरिज्म के लिए जाना जाता है, राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है, 'जैसलमेर' में आज देश से ही नहीं विदेशों से भी सैलानी आते हैं, यहां की आर्थिक स्थिति का मुख्य स्रोत टूरिज्म ही है, आज यह रेल, सड़क और हवाई मार्ग से जुड़ा हुआ है, आवागमन के साधन बहुत बढ़ गए हैं, पर्यटक यहां ऊंट की सवारी और रात्रि ठहरने के लिए आते हैं, जहां पर्यटकों के लिए व्यवस्था, गीत-संगीत सभी उत्तम हैं।

'जैसलमेर' का किला, हवेलियां, तालाब यहां के आकर्षण का मुख्य केंद्र है, कई प्राचीन देवस्थान भी है। प्राचीन समय में जैन समाज के यहां लगभग २७०० परिवार रहते थे, पर आज इक्का-दुक्का जैन परिवार ही बसे हुए हैं, एक समय अरब क्षेत्र से आने वाले व्यापारियों का ट्रेड सेंटर हुआ करता था, यहां अफीम की पैदावार अधिक होती थी, जो सरकार मान्य थी, जिसका निर्यात भारत के अन्य क्षेत्रों में भी होता था, आज जैसलमेर में हर तरह का व्यापार होने लगा है, साथ ही पानी की व्यवस्था अच्छी होने से यहां खेती-बाड़ी भी अच्छी होने लगी है। आज यहां के दर्शनीय स्थलों में 'लोदरवा जैन तीर्थ' जिसका निर्माण विक्रम संवत १६६४ में किया गया है, लगभग ४०८ वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'जैसलमेर' में....

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'!

महेंद्र जी का जन्म व प्रारंभिक शिक्षा 'जैसलमेर' में ही संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा आपने 'जोधपुर' से ग्रहण की है। आप चार्टर्ड अकाउंटेंट के रूप में कार्यरत है, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। 'लोदरवा जैन तीर्थ' ट्रस्ट के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। जय भारत!

-मेरा राजस्थान

चूरू नागरिक संघ मुंबई के सभी नागरिकों को हार्दिक शुभकामनाएं

PASHUPATI
CAPITAL SERVICES PVT. LTD.

Consistent and Sustainable **Wealth Creation**

Services

- Prop-Desk Algo-Trading
- HNI Brokerage
- GIFT City Offerings (TRADEAIR Innovating Capital)

Enhanced Yield on Portfolio (2 crores+)

Benefits of shares pledging

- No Holding Period
- Usable for ETFs, Intraday, MTF & F&O
- Pledge 600+ Stocks ETFs

GIFT City TRADEAIR Innovating Capital

Broker-Dealer
SENSEX Gift Nifty

Fund Management (CAT-III)
Comex · NYMEX · CBOT · CME

US Stocks Brokerage

Your Trusted Partner

- Premier Algorithmic Based Prop-Trading House
- CRISIL A-/Stable/ A1 rated
- Strong Balance Sheet and Networth

Contact Us

(91) 2240345500 | info@pashupaticapital.com | pashupaticapital.com

With best complements from:

Rajesh Kumar Sonthalia, CEO

9831077130

PPPS GROUP

Business Activities: **Generation of Solar Power Energy,**
Development of Solar Park, EPC Contractor,
Module Manufacturing on OEM, Steel and Engineering Products,
Polymers and plastic Products, Textiles and Garments,
Gems and Jewellery,
Infrastructure Development and International Trade

. . . . . .

DB 126, Sector 1, Salt Laka City, Kolkata, Bharat- 700064

Email ID: ptpl1995@gmail.com

RNI No. MAHHIN/ 2003/11570
Postal Registration No. MCN/113/2025-2027
WPP License No. MR/Tech/WPP-246/North/2025-27
License to post without prepayment'
Published on 28/11/2025 & Posting on 30th of every previous Month
at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

ADD Gel®
LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

24 SHADES

CALLIGRAPHY
GIFT OF CREATIVITY

Best Gift for Birthday

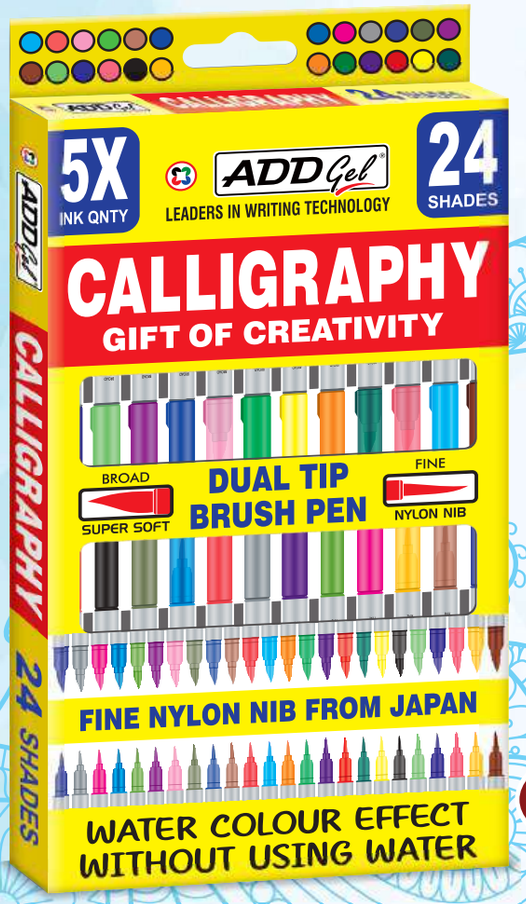

FINE NYLON NIB
FROM JAPAN

BROAD
SUPER SOFT
FINE
NYLON NIB

MRP ₹450/- PER PACK

Make in India

www.shop.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400093 से मुद्रित करवाकर बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-022-4015 8094
अणुडाक - mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना - www.merarajasthan.co.in